भूदान-यज्ञ

www.[illegible].in

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक – साप्ताहिक

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

वर्ष : १५ अंक : २२

सोमवार ३ मार्च, '६९

अन्य पृष्ठों पर

पाकिस्तान की नयी चेतना

शिवसेना : न शिव, न सेना

—सम्पादकीय २६६

हिंसा और टकराव का वर्तमान सन्दर्भ···

—जयप्रकाश नारायण २६८

···और एक साथी गये

—काका कालेलकर २७०

मध्यावधि चुनाव··· —रुद्रभान २७१

श्रमभारती मधुबनी··· —श्रीनारायण २७३

अ० भा० कस्तूरबा-शिविर-सम्मेलन

—श्रवणकुमार गर्ग २७५

तंजौर में शान्ति-कार्यक्रम का अभिक्रम

—एस० हरिहरन् २७८

आंदोलन के समाचार २७९

सम्पादक
राममूर्ति

सर्व सेवा संघ प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी–१, उत्तर प्रदेश
फोन : ४२८५

जात-पाँत अच्छी चीज है या बुरी ?

जात-पाँत के बारे में मैंने बहुत बार कहा है कि आज के अर्थ में मैं जात-पाँत नहीं मानता। यह समाज का 'फालतू अंग' है और तरक्की के रास्ते में रुकावट जैसा है। इसी तरह आदमी-आदमी के बीच ऊँच-नीच का भेद भी मैं नहीं मानता। हम सब पूरी तरह बराबर हैं। लेकिन बराबरी आत्मा की है, शरीर की नहीं। इसीलिए यह मानसिक अवस्था की बात है। बराबरी का विचार करने की और उसे जोर देकर जाहिर करने की जरूरत पड़ती है, क्योंकि दुनिया में ऊँच-नीच के भारी भेद दिखाई देते हैं। इस बाहर से दीखनेवाले ऊँच-नीचपन में से हमें बराबरी पैदा करनी है।

कोई मनुष्य अपने को दूसरे से ऊँचा मानता है, तो वह ईश्वर और मनुष्य दोनों के सामने पाप करता है। इस तरह जात-पाँत जिस हद तक दरजे का फर्क जाहिर करती है, उस हद तक वह बुरी चीज है।

लेकिन वर्ण को मैं अवश्य मानता हूँ। वर्ण की रचना पीढ़ी दर-पीढ़ी के धन्धों की बुनियाद पर हुई है। मनुष्य के चार धन्धे सार्वत्रिक हैं—विद्यादान करना, दुखी को बचाना, खेती तथा व्यापार और शरीर की मेहनत से सेवा। इन्हींको चलाने के लिए चार वर्ण बनाये गये हैं। ये धन्धे सारी मानव-जाति के लिए समान हैं।···

गुरुत्वाकर्षण के कानून को हम जानें या न जानें, उसका असर तो हम सभी पर होता है। लेकिन वैज्ञानिकों ने उसके भीतर से ऐसी बातें निकाली हैं, जो दुनिया को चौंकानेवाली हैं। इसी तरह हिन्दू धर्म ने वर्ण-धर्म की तलाश करके और उसका प्रयोग करके दुनिया को चौंकाया है।

जब हिन्दू अज्ञान के शिकार हो गये, तब वर्ण के अनुचित उपयोग के कारण अनगिनत जातियाँ बनीं और रोटी-बेटी व्यवहार के अनावश्यक और हानिकारक बन्धन पैदा हो गये। वर्ण-धर्म का इन पाबन्दियों के साथ कोई नाता नहीं है। अलग-अलग वर्ण के लोग आपस में रोटी-बेटी व्यवहार रख सकते हैं। चरित्र और तन्दुरुस्ती के खातिर ये बन्धन जरूरी हो सकते हैं, लेकिन जो ब्राह्मण शूद्र की लड़की से या शूद्र ब्राह्मण की लड़की से ब्याह करता है वह वर्ण-धर्म को नहीं मिटाता।[1]

अस्पृश्यता जाति व्यवस्था की उपज नहीं है, बल्कि ऊँच-नीच भेद की भावना का परिणाम है। ज्यों ही अस्पृश्यता नष्ट होगी, जाति-व्यवस्था स्वयं शुद्ध हो जायेगी। यानी मेरे सपने के अनुसार वह चार वर्णोंवाली सच्ची वर्ण-व्यवस्था का रूप ले लेगी।[2]

—मो० क० गांधी

(१) 'वर्ण-व्यवस्था' : पृष्ठ४९–५० (२) 'हरिजन' : ११–२–'३३

सम्पादकीय

पाकिस्तान की नयी चेतना

पाकिस्तान में 'बेसिक डिमाक्रेसी' का केस ([illegible]) टूट गया। वहाँ के बुनियादी लोकतंत्र की बुनियाद लोक में तो थी नहीं, थी एक तानाशाह और उसके तंत्र में जिसे पिछले दिनों जनता के प्रहारों ने तोड़ डाला। संगठित सैनिक-शक्ति को नागरिकों के सामने झुकना पड़ा। इसके कारण पाकिस्तान में दूसरे चाहे जो सुधार हों, पर इतना तो होगा ही कि हर बालिग नागरिक को वोट का अधिकार मिल जायगा। वोट का अधिकार भूलें करके सीखने का, और सामूहिक इच्छा-शक्ति को प्रकट करने का अधिकार है जिससे अयूब ने अब तक एक शुभचिंतक पिता की तरह अपनी नादान प्रजा को अलग कर रखा था।

यह सब पाकिस्तान में देखते-देखते हुआ है। क्या चेकोस्लोवाकिया और क्या पाकिस्तान, दोनों जगह यह बात खुलकर सामने आ गयी है कि विद्रोह अगर व्यापक हो तो उसे षडयंत्र करने और हाथ में बन्दूक लेने की जरूरत नहीं है। चेकोस्लोवाकिया के निशस्त्र प्रतिकार के कारण तो दुनिया के विस्तारवादियों और शस्त्रवादियों में अन्दर-अन्दर यह बेचैनी भी पैदा हो गयी है कि बन्दूक का जवाब तो बन्दूक से दिया जा सकता है, लेकिन जो विद्रोह बन्दूक को अलग रखकर उभरता है उसका मुकाबिला कैसे किया जायगा? कितनी भी दीवानी सरकार हो वह जवानों की जवानी को नहीं दबा सकती। पाकिस्तान के जवानों की जवानी ने उनकी दीवानी सरकार को झुकाया है। अब से कुछ महीनों बाद जब पाकिस्तान में खुला आम चुनाव होगा और भारत की तरह वहाँ भी दलों के आधार पर सरकार बनेगी तो जनता देखेगी कि 'बुलेट' का जवाब बुलेट से ही देने में एक अयूब की जगह दूसरा अयूब स्वीकार करना पड़ता है, लेकिन अगर खुले, निशस्त्र विद्रोह का रास्ता अपनाया जाय तो 'बैलट' से बुलेट का पूरा जवाब दिया जा सकता है। लेकिन प्रश्न है कि केवल अयूब के जाने से क्या हुआ अगर अयूबशाही न खत्म हुई?

अयूब के जाने से सरकार बदल जायगी, इसमें कोई शक नहीं, लेकिन सरकार का बदलना आज के जमाने में काफी नहीं होता। यह पाकिस्तान के उन नेताओं को जो जनता के नाम के नारे लगा रहे हैं, तथा उस जनता को जो अपने नये 'वीरों' के नारे लगा रही है, भारत को देखकर समझ लेना चाहिए, ठीक उसी तरह जैसे हमें उन्हें देखकर यह सबक ले लेना चाहिए कि कागज के एक टुकड़े की (जिसे बैलट-पेपर कहते हैं) क्या कीमत होती है। जिस समय अयूब गद्दी पर आया था उस वक्त उसका कितना स्वागत हुआ था! निकम्मे नेताओं के जाने पर जनता ने मुक्ति की ठण्ढी साँस ली थी। और, पाकिस्तान में अयूबशाही के जमाने में, जिसे आज देश का विकास कहा जाता है वह भी कुछ कम नहीं हुआ। खेती में जो 'हरी क्रान्ति' (ग्रीन रेवोल्यूशन) भारत में आज हो रही है वह पाकिस्तान में काफी पहले शुरू हो चुकी थी। वहाँ की मजबूत, स्थायी सरकार, खेती के विकास तथा राष्ट्रीय आय में वृद्धि को देखकर पच्छिम के देश पाकिस्तान को 'विकास का नमूना' मानने लगे थे। लेकिन हाल की घटनाओं से सिद्ध हो गया कि ये नारे कितने छिछले होते हैं। रोटी के लिए तरसनेवाली जनता भी केवल रोटी से संतुष्ट होने से इनकार कर रही है। इसलिए अब कोई भी शासन, नाम वह अपना चाहे जो रख ले, नौकरशाही के भरोसे नहीं चल सकता; और न तो ऊपर के थोड़े-से लोगों को लेकर देश का सच्चा विकास कर सकता है, और राष्ट्रीय आय के मोहक आँकड़े दिखाकर जनता को देर तक धोखे में रख सकता है। आज का मनुष्य रोटी के साथ-साथ भूखा है सम्मान का, स्वतंत्रता का, समता और भाईचारे का। इन चीजों से वंचित मनुष्य क्षोभ में कुछ भी करेगा—मारेगा, मरेगा—लेकिन चुप नहीं बैठेगा। पाकिस्तान की जनता देखेगी, जैसे भारत की जनता चुनावों के बाद देखती आयी है, कि सरकार बदलने की खुशी टिकाऊ नहीं होती। मुक्ति की प्यास सिर्फ सरकार-परिवर्तन से नहीं बुझती।

पाकिस्तान की जनता ने अपनी विरोधात्मक प्रतिकार-शक्ति का भरपूर परिचय दिया है, लेकिन समाज तो तब बदलेगा जब विद्रोह रचनात्मक होगा। और, विद्रोह रचनात्मक तब होगा जब गाँव-गाँव की जनता अपनी सामूहिक इच्छा-शक्ति का परिचय देगी। निर्णय की शक्ति सरकार के हाथ से निकलकर जनता के हाथों में आनी चाहिए। जनता को अपना जीवन अपने ढंग से बिताने की छूट होनी चाहिए। यह काम मात्र शासक बदलने से नहीं होगा। बल्कि शासन और उत्पादन के पूरे ढाँचे को बदलने से होगा। भारत में ग्रामदान-आन्दोलन यही करने की कोशिश कर रहा है। इस तरह के आन्दोलन की पाकिस्तान को उतनी ही जरूरत है जितनी भारत को।

भारत और पाकिस्तान, दोनों की जनता जिस दिन अपने-आप सोचना शुरू करेगी, उस दिन वह देखेगी कि जिस तरह शासकों के नारे ऊपरी और क्षणिक होते हैं उसी तरह राष्ट्र के नाम में लड़ी जानेवाली लड़ाइयाँ भी प्रायः निरर्थक होती हैं, क्योंकि उनके साथ शासकों की महत्त्वाकांक्षाएँ जुड़ी होती हैं, सामान्य जनता की आकांक्षाएँ नहीं। हमें आशा है कि पाकिस्तान में जो शक्ति पैदा हुई है, और भारत में ग्रामदान के द्वारा जो विकसित हो रही है, वह मुक्ति तो लायेगी ही, साथ-साथ दोनों देशों की जनता को मैत्री के सूत्र में भी बाँधेगी। पाकिस्तान की नयी चेतना पूरी एशिया में मुक्ति और मैत्री की दिशा में प्रेरक सिद्ध हो सकती है।

शिवसेना : न शिव, न सेना

सेना बड़ा-से-बड़ा विध्वंस कर सकती है, लेकिन उपद्रव नहीं करेगी। संगठित हिंसा का भी एक ऊँचा लक्ष्य हो सकता है, और न्याय का दूसरा कोई रास्ता न रह जाने पर उसका औचित्य भी

www.vinoba.in

माना जा सकता है, लेकिन बम्बई में शिवसेना ने जो कुछ किया उसका लक्ष्य क्या था, और औचित्य क्या था ? बम्बई का कांड इस बात की मिसाल है कि जोश की शराब होश की उसी तरह दुश्मन हो सकती है जैसे बोतल की शराब होती है।

महाराष्ट्र के ही क्या, अगर इस बड़े देश के किसी भाग के लोग अपनी भूमि, अपनी भाषा या अपने लोगों से प्रेम करें, तो किसीको भी क्या शिकायत हो सकती है, और क्यों होगी ? कहीं भी किसी तरह का अन्याय होता हो, किसी पर होता हो, और किसीके द्वारा होता हो, तो उसके विरुद्ध आवाज उठाना गलत नहीं है, बल्कि जरूरी भी माना जा सकता है। लेकिन मांग निष्पक्षता की ही की जा सकती है, पक्षपात की नहीं। पक्षपात तथा निष्पक्ष पड़ोसी-प्रेम में बुनियादी अन्तर है। इस बात पर जिद करना कि मैसूर-महाराष्ट्र के विवाद का निबटारा उसी तरह हो जैसे शिवसेना चाहती है, नहीं तो वह दिल्ली-सरकार के किसी भी मंत्री को बम्बई में घुसने नहीं देगी, उपद्रव और उद्दण्डता की पराकाष्ठा तो है ही, साफ-साफ देश-द्रोह भी है। अगर शिवसेना को देश में शिव-समाज बनाने और कायम रखने का कुछ भी ख्याल है तो उसे जानना ही पड़ेगा, और अगर वह न जानने की ही जिद करे तो देश की सरकार को कानूनी तरीकों से उसे जताना ही पड़ेगा, कि राष्ट्रीय जीवन की कुछ मर्यादाएँ हैं जिनका उल्लंघन किसी हालत में नहीं किया जा सकता। नागरिक-जीवन को कायम रखना सरकार का पहला काम है।

शिवसेना में न शिव की प्रेरणा है, न सेना का अनुशासन। संकीर्ण क्षेत्रवाद का जो विध्वंसकारी परिणाम हो सकता है वह शिवसेना के कुकृत्यों में प्रकट हुआ है।

देश में शिवसेना अकेली नहीं है। इस वक्त शिवसेना की तरह अनेक सेनाएँ खुलकर या छिपकर काम कर रही हैं। सचमुच प्रचलित वादों और विवादों की आड़ में, शक्लें बदलकर, फासिस्टवाद पनप रहा है। फासिस्टवाद का अपना अलग दिमाग होता है—'ट्राइबल माईंड', जो तंग दायरे को छोड़कर बड़े दायरे में काम ही नहीं कर सकता। फासिस्टवाद राष्ट्र के चित्त में छिपे हुए 'कबीलेपन' (ट्राइबलिज्म) को उभाड़ता है, और लोक-चित्त को विश्व-चित्त (वर्ल्ड माईंड) की ओर जाने से रोकता है। दिमाग को तरह-तरह के भय और घृणा में जकड़कर रखना फासिस्टवाद का माना-जाना तरीका है। भारत की राजनीति में बढ़ते हुए जातिवाद के द्वारा हमें कबीलेपन के दिमाग का दर्शन हो रहा है जिसका फायदा 'वोट के व्यापारी' उठाते हैं। दुःख यह है कि आज राष्ट्रीय चेतना कबीलेपन के सामने दबी-सी दिखाई देती है, और विश्व-चेतना तो राष्ट्रीयता के उन्माद से कोसों दूर रह जाती है। यह समझने की बात है कि स्थानीय जीवन की स्वायत्तता तभी संभव और समृद्ध होगी जब वह राष्ट्रीय संदर्भ के साथ जुड़ी रहेगी, और राष्ट्रीय जीवन तभी समृद्ध होगा जब वह विश्व-संदर्भ के साथ जुड़ेगा। इस जमाने के इस सामान्य संकेत को भी फासिस्टवादी दिमाग समझने से इनकार करता है।

हिंसात्मक कांड का मुकाबिला सरकार की बड़ी हिंसा कर सकती है। जनता ने सरकार को हिंसा की शक्ति इसीलिए दी भी है लेकिन 'हिंसक दिमाग' के, जो किसी बड़े नारे के प्रभाव में पनपता और फैलता है, मुकाबिले के लिए दूसरे उपाय सोचने पड़ेंगे। देश में सत्ता के लिए दल युद्ध चलता रहे, और एक-एक नागरिक को समेटनेवाली व्यापक विकास की कोई राष्ट्रीय योजना न हो, और शिक्षा आज ही जैसी जीवन-विमुख हो, तो रचनात्मक दिमाग का निर्माण कैसे होगा ? प्रश्न गहरा है, इस पर गहराई से विचार होना चाहिए।

परिस्थिति की मांग है कि शिवसेना की गतिविधियों की न्यायायिक जाँच तो की ही जाय, लेकिन उसे ही पर्याप्त न मानकर एक गैर-सरकारी जाँच समिति को भी परिस्थिति का गहराई से अध्ययन करना चाहिए, ताकि स्थायी शान्ति के लिए मूल कारणों का निराकरण प्रस्तुत किया जा सके।•

"भूदान-यज्ञ" साप्ताहिक का प्रकाशन-वक्तव्य

[न्यूजपेपर रजिस्ट्रेशन ऐक्ट (फार्म नं० ४, नियम ८) के अनुसार हर एक अखबार के प्रकाशक को निम्न जानकारी प्रस्तुत करने के साथ-साथ अपने अखबार में भी वह प्रकाशित करनी होती है। तदनुसार यह प्रतिलिपि यहाँ दी जा रही है। —सं०]

(१) प्रकाशन का स्थान	:	वाराणसी
(२) प्रकाशन का समय	:	सप्ताह में एक बार
(३) मुद्रक का नाम	:	श्रीकृष्णदत्त भट्ट
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	"भूदान यज्ञ" साप्ताहिक, राजघाट, वाराणसी–१
(४) प्रकाशक का नाम	:	श्रीकृष्णदत्त भट्ट
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	"भूदान-यज्ञ" साप्ताहिक, राजघाट, वाराणसी–१
(५) सम्पादक का नाम	:	राममूर्ति
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	"भूदान-यज्ञ" साप्ताहिक, राजघाट, वाराणसी–१
(६) समाचार-पत्र के संचालकों का नाम-पता	:	सर्व सेवा संघ (वर्धा) राजघाट, वाराणसी (सन् १८६० के सोसायटीज रजिस्ट्रेशन ऐक्ट २१ के अनुसार रजिस्टर्ड सार्वजनिक संस्था) रजिस्टर्ड नं० ५२

मैं श्रीकृष्णदत्त भट्ट यह स्वीकार करता हूँ कि मेरी जानकारी के अनुसार उपर्युक्त विवरण सही है।

वाराणसी, २८-२-६९ — श्रीकृष्णदत्त भट्ट, प्रकाशक

प्रश्न परिप्रश्न

हिंसा और टकराव का वर्तमान संदर्भ तथा विकल्प और समाधान के कुछ पहलू

उत्तर इतिहास के गर्भ में

प्रश्न : बापू को गये २१ साल पूरे हो रहे हैं। इन २१ सालों में कहने-सुनने लायक बहुत सारे परिवर्तन देश और दुनिया की परिस्थितियों में हुए हैं, लेकिन इन सारे परिवर्तनों को एक ओर रख दें तो साम्प्रदायिक हिंसा की उग्र लपटों का जो दर्शन सन् १९४६-४७-४८ में हुआ था, ऐसा लगता है कि बहुत थोड़े से परिवर्तित रूप में हिंसा की वही लपटें पुनर्जीवित हो उठी हैं। ऐसे वक्त में गांधी की याद जनहृदय में स्वाभाविक ही हो उठती है। लोग कह पड़ते हैं कि गांधीजी होते तो ऐसा नहीं हो पाता। इस पहलू पर आपका क्या दृष्टिकोण है ?

जयप्रकाश नारायण : ऐसा कहना मुझे अतिशयोक्ति लगता है कि देश के विभाजन के समय सांप्रदायिक हिंसा की जो लपटें देश में फैल गयी थीं, थोड़ी-सी परिवर्तित मात्रा में वैसी ही लपटें आज भी फैल रही हैं। उस समय जो कुछ होता था उसके पीछे अनेक कारण थे। इनमें से एक कारण यह भी था कि अंग्रेज राज्यपाल और अन्य प्रशासक, जो देश के उन हिस्सों में थे जहां पाकिस्तान बना, निःसन्देह इस बात की साजिश कर रहे थे कि भारत को खून के दरिया में डुबो दें। पंजाब और सरहदी सूबों में जो घटनाएँ घटीं वे उनकी साजिश के बगैर उतने बड़े पैमाने पर नहीं घटती। इन कारणों के अतिरिक्त और भी कई कारण थे, जो भारत के दोनों हिस्सों में मौजूद थे। आज की सांप्रदायिक हिंसा में मुख्यतः राजनीतिक और कुछ गौण अंश में आर्थिक 'मोटिव्स' हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सुचिंतित नीति का एक बड़ा परिणाम हिंदू-मुस्लिम दंगा ही हो सकता है; बल्कि दंगा नहीं, हिंदुओं का मुसलमानों पर एकतरफा आक्रमण कहा जा सकता है। उस तरफ मुसलमानों में भी ऐसी शक्तियां काम कर रही हैं, जो उनको एक संप्रदाय तथा राजनीतिक जमात में बांधकर संगठित कर रही हैं, जिसका परिणाम मुसलमानों का राष्ट्रीय जीवन से पृथक् पड़ जाना और उनकी सांप्रदायिक भावनाओं को पुष्ट करना ही होगा।

जयप्रकाश नारायण :
शांतिमय क्रान्ति की सचेत आकांक्षा

इस प्रकार से दो सांप्रदायिक शक्तियों का टकराव अनिवार्य हो जाता है। दुर्भाग्य से देश में जितनी भी संप्रदाय-निरपेक्ष शक्तियां हैं, वे इन उभरती हुई सांप्रदायिकता की तरफ से नजर बचाये हुई हैं। अक्सर सांप्रदायिक शक्तियों को नया बल उस समय मिल जाता है जब संप्रदाय-विरोधी वामपंथी शक्तियां भी राजनीतिक लाभ के लालच से उनके साथ हाथ मिला लेती हैं। मुझे इस बात से कुछ संतोष अवश्य हो रहा है कि पिछले दो सालों की घटनाओं से और सांप्रदायिक शक्तियों की बढ़ती हुई ताकतों से जनता सचेत हो गयी है और राष्ट्रीय एकता परिषद् ने भी इस प्रश्न को गम्भीरता से उठाया है।

गांधीजी होते तो क्या करते, यह तो बेमानी प्रश्न है। कौन कह सकता है कि वह क्या करते ? इतना तो अवश्य है कि विभाजन के बाद भारत और पाकिस्तान जिस तरह एक-दूसरे से दूर होते गये, वह शायद यदि गांधीजी होते तो न होता। वह अंतिम दिनों में सोच ही रहे थे कि पश्चिम पाकिस्तान जाकर जिन्ना साहब से दोनों देशों के भावी सम्बन्धों के बारे में चर्चा करेंगे। यह भी विदित ही है कि गांधीजी नये भारत के निर्माण के लिए सेवकों की एक नयी सेना खड़ी करना चाहते थे। अगर वह जीवित रहते तो आज कौन कह सकता है कि भारतीय जनता की जागृति और उसकी अपने पैरों पर खड़े होने की शक्ति, शासन करनेवालों पर अंकुश रखने की शक्ति, अपनी समस्याओं को अपनी शक्ति से हल करने की शक्ति, इन सभी शक्तियों का कितना विकास हुआ होता और हिंसा की परिस्थिति पर उनका क्या असर हुआ होता। परन्तु आपके प्रश्नों का उत्तर तो इतिहास के गर्भ में ही पड़ा रहेगा।

...बहुत आगे नहीं बढ़ सकेंगी

प्रश्न : इस समय देश में कुछ ऐसी शक्तियाँ उभर रही हैं, जो गांधी को निरर्थक साबित करना चाहती हैं। एक ओर राष्ट्र के नाम पर, दूसरी ओर क्रान्ति के नाम पर जनता को संघर्ष के लिए सुसंगठित कर रही हैं। इन संघर्षों में बुनियादी शक्ति हिंसा की दिखाई देती है। इस सन्दर्भ में गांधी-विचार के प्रति निष्ठावान लोगों को क्या करना चाहिए ?

जयप्रकाश नारायण : जहां तक मेरा अनुमान है हिंसात्मक क्रांति की शक्तियां बहुत आगे नहीं बढ़ सकेंगी। भारत के राजनीतिक और आर्थिक बनाव में इनकी संभावना मुझे कम ही दीखती है। पर चाहे जो कुछ भी हो, हमारा कर्तव्य तो स्पष्ट ही है कि हम शांतिमय क्रांति को जितनी तीव्रता से आगे बढ़ा सकते हैं, बढ़ाते जायँ। सौभाग्य से हमारे

बीच पूज्य विनोबाजी मौजूद हैं, जिनके हृदय की आग की चिनगारी देश भर में आज फैल रही है और जिसके परिणामस्वरूप तमिलनाडु से लेकर उत्तर प्रदेश तक, और उत्कल से लेकर महाराष्ट्र तक, कई प्रदेशों ने—जिनमें देश के सबसे बड़े प्रदेश भी सम्मिलित हैं—प्रदेशदान का संकल्प लिया है। प्रदेशदान अपने-आपमें शांतिमय क्रांति नहीं है। परन्तु शांति और अशांति के प्रश्न का उत्तर तो इसमें निहित है कि हम कितनी अधिक कुशलता से उसकी तैयारी करते हैं, और उसकी ठोस बुनियाद का निर्माण करके उस पर क्रांति की मंजिलें कितनी तीव्रता से खड़ी करते हैं।

काश, अगर...

प्रश्न : सारी दुनिया में दलीय राजनीति के आधार पर विकसित लोकतांत्रिक सत्ता और फौजी तथा साम्यवादी तानाशाही नयी पीढ़ी को समाधान नहीं दे पा रही है। हर जगह युवजनों में हर प्रकार की सत्ता के खिलाफ एक विद्रोही चेतना की लहर-सी दौड़ रही है। नयी पीढ़ी की यह विकलता क्या मानवता के लिए कोई शुभ संकेत है? क्या इस सन्दर्भ में गांधी-विचार से दिशा-निर्देश की अपेक्षा की जा सकती है? गांधी-विचार का कौनसा पहलू इस समय नयी पीढ़ी के लिए समाधानकारी साबित हो सकता है?

जयप्रकाश नारायण : आपके प्रश्न में जो कुछ संकेत है, वह यूरोप, अमेरिका के युवजनों के बारे में तो सही है, लेकिन जहाँ तक भारत के युवजनों की बात है, खासकर विद्यार्थियों में जो कुछ उथल-पुथल नजर आ रही है, उसके पीछे कोई क्रांतिकारी भावना अथवा विचारधारा काम कर रही है, ऐसा नहीं लगता। पाश्चात्य जगत् के जिनमें यूरोप के साम्यवादी देश भी शामिल हैं—विद्यार्थियों में जो आज विद्रोह देखा जा रहा है उसमें भविष्य के लिए बहुत बड़ी आशा छिपी हुई है। उस विद्रोह में यों तो कई विचारधाराएँ काम कर रही हैं, परन्तु एक प्रबल धारा यह है कि वह वर्तमान अति औद्योगिक, अति संगठित अति, केंद्रित, अति शासित समाज-रचना, जिसमें राज्य-रचना तथा अर्थ-रचना भी निहित है, का अस्वीकार है। उनमें से बहुतेरे विद्रोही 'पार्टीसिपेटिव' या 'पार्टीसिपेटरी डेमोक्रेसी' की बात कर रहे हैं, छोटे-छोटे राज्य और विकेंद्रित समाज-रचना की ओर इंगित कर रहे हैं। ये सब विचार गांधीजी के ही विचार हैं। यद्यपि ऐसा नहीं कहा जा सकता कि उन सबने गांधीजी से ही ये विचार लिये हैं। यद्यपि यह भी सही है कि उनमें से बहुतसे युवक नेता गांधीजी से अत्यन्त प्रभावित हुए हैं। दुर्भाग्य से भारत उसी दिशा में बढ़ता जा रहा है, जिस ओर पाश्चात्य राष्ट्र पिछले २०० वर्षों में बढ़े हैं, और जिधर बढ़ते हुए आज ऐसी जगह पहुँचे हैं जहाँ वर्तमान यांत्रिक सभ्यता का निर्माण हुआ है। काश, इस देश के युवकों को यूरोपीय और अमेरिकी छात्रों के विद्रोह से कुछ चेतावनी मिलती!

विफलता का मूल कारण

प्रश्न : २१ सालों की भारत की दलीय राजनीति और लोकतांत्रिक रचना को आपने बहुत ही निकट से देखा-समझा है। क्या आप मानते हैं कि ये सारे प्रयास इस अर्थ में विफल रहे हैं कि देश की किसी समस्या का कोई स्थायी समाधान नहीं निकला है। आप की दृष्टि से इसके बुनियादी कारण क्या हैं? क्या गांधीजी के आखिरी वसीयतनामे पर कांग्रेस ने अमल किया होता, तो परिस्थिति कुछ भिन्न होती?

जयप्रकाश नारायण : स्थायी हल तो यों किसी समस्या का नहीं हो सकता, क्योंकि परिस्थिति बदलती है। इसलिए इस तरह सोचना चाहिए कि आज की परिस्थिति में जो समस्याएँ उठ रही हैं उनका हल संतोषजनक मिल पा रहा है या नहीं। आपका यह कहना ठीक है कि जिस प्रकार की बहुदलीय राजनीति अपने देश में आज चल रही है उसके परिणामस्वरूप हमारी बुनियादी समस्याओं का कोई संतोषजनक हल नहीं निकल पाया है। लेकिन अनेक दलों का होना ही इसका कारण नहीं हो सकता, क्योंकि १६ वर्षों तक तो एक ही दल का शासन देश भर में रहा था (केरल प्रदेश छोड़कर)। कांग्रेस को एक बहुत बड़ा अवसर मिला था प्रारम्भ में, जनता की जो श्रद्धा उस पर थी उसको देखते हुए। कांग्रेस की विफलता के मूल कारण क्या हैं, यह एक गहन अध्ययन का विषय है। मुझे लगता है कि गलती पं० जवाहरलाल नेहरू से ही शुरू हुई। वह मान बैठे कि देश का नवनिर्माण केवल शासन और प्रशासन के हाथों हो सकेगा।

गांधीजी ने अपने 'वसीयतनामे' में जो विचार रखा था, उसका अक्षरशः पालन यानी कांग्रेस का लोक-सेवक संघ में परिवर्तन तो गांधीजी के अलावा और कोई करा नहीं सकता था। परन्तु गांधीजी के उस प्रस्ताव में जो विचार व्यक्त किये गये थे उसकी तरफ तो जवाहरलालजी का और कांग्रेस के अन्य शीर्षस्थ नेताओं का ध्यान अवश्य जाना चाहिए था। लेकिन ऐसा लगता है कि अंग्रेजी साम्राज्य का जो भारत में प्रशासन का विशाल संगठन बना हुआ था, उस पर कांग्रेस-नेताओं का कब्जा हो जाने से उनको यह भ्रम हुआ कि सत्ता की शक्ति, कानून, ऊपर की बनी योजनाओं और अरबों रुपयों आदि के द्वारा भारत की सभी समस्याओं का हल किया जा सकेगा। जवाहरलालजी को अपनी भूल तो लगभग उनके जीवन के अंत में समझ में आयी, परन्तु तब तक तो सारा काम बिगड़ चुका था, और देश की जनता विशेषकर युवकों तथा बुद्धिजीवियों की जो छिपी हुई शक्ति देश के नव-निर्माण में चमत्कारी पार्ट अदा कर सकती थी और जिसके कारण देश के सारे मनोवैज्ञानिक वातावरण में क्रांतिकारी परिवर्तन हो सकता था, वह छिपी ही रह गयी। विफलता के अन्य भी कारण हो सकते हैं, और अवश्य हैं, लेकिन मैं समझता हूँ कि यह मूल कारण है।•

पठनीय मननीय

नयी तालीम

शैक्षिक क्रांति की अग्रदूत मासिकी

वार्षिक मूल्य : ६ रु०

सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी-१

www.vinoba.in

...और एक साथी गये

• काका कालेलकर

यह सारी सृष्टि ही मर्त्यलोक है। सबको मरना ही है। ऐसी स्थिति में मृत्युनोंध का रिवाज एक पक्षपात के जैसा हो जाता है।

मेरी एक दूसरी कठिनाई है। श्रुति भले कहे सौ बरस जीने की इच्छा रखनी चाहिए (जिजीविषेत् शतं समाः)। मनु भगवान ने भले ही कहा हो कि न अपनी मृत्यु का हम अभिनन्दन करें, न जीवित का अभिनन्दन करें। निष्ठावान नौकर जिस तरह हुक्म की राह देखता है उसी तरह काल की प्रतीक्षा करनी चाहिए। तो भी जब मैं देखता हूँ कि मेरे अत्यन्त नजदीक के निष्ठावान और उत्तम सेवा करनेवाले साथी मेरे पहले चले जाते हैं तब उनके पीछे मैं जिन्दा रह रहा हूँ यह कोई गुनाह कर रहा हूँ, ऐसी भावना मेरे मन में उठती है और मानने लगता हूँ कि अपना समय कब का पूरा हो चुका है, तब भी जी रहा हूँ। ऐसी मनस्थिति में अपने पुराने साथी के बारे में लिखते मन अस्वस्थ होता है। लिखने की इच्छा होते हुए भी कलम नहीं चलती। और दुनिया ने मृत्युलेख लिखने का ढंग ही इस तरह निश्चित कर डाला है कि यह एक रस्म अदा करने की बात होती है। लोग दिवंगत आत्मा का स्मरण करने की जगह लेख कैसा लिखा है, यही देखने बैठते हैं। मेरे बचपन से ऐसे लेख पढ़ता आया हूँ, इसलिए मृत्युलेख लिखने का उत्साह ही नहीं रहता।

अभी-अभी मेरे पुराने आश्रम और विद्यापीठ के साथी श्री मगनभाई देसाई का देहान्त हो गया! समाचार सुनते ही मैंने रात को अपनी प्रार्थना के समय उनका स्मरण किया, उन्हें श्रद्धांजलि अर्पण की और सन्तोष माना। लेकिन जब चन्द स्थानिक कार्यकर्त्ताओं ने उनकी सभा में मुझे बोलने को कहा तब मौन धारण करना भी कठिन हो गया।

श्री मगनभाई ने मुझे अपना पहला परिचय दिया अपनी विशिष्ट शैली से। उन्होंने एक कागज मेरे हाथ में दिया। उसमें लिखा था—

"मैं आश्रम में दाखिल होना चाहता हूँ। आश्रम की शाला में काम करने की इच्छा है। अगर आपकी राय हो कि आश्रम में दाखिल होने के लिए जरूरी योग्यता मुझमें नहीं है तो कृपया मुझे बताइए कि मुझे कौन-कौनसी योग्यता हासिल करनी चाहिए। मैं बाकायदा प्रयत्न करूँगा और फिर से आपके पास आऊँगा।"

मैंने कहा, "गांधीजी ने मुझे जब बुलाया तब मुझे कहा नहीं था कि मुझमें कौनसी योग्यता होनी चाहिए। सेवा करनी है। आश्रम इसके लिए अनुकूल स्थान है। गांधीजी से बहुत कुछ मिल सकेगा और अपने हाथों

श्री स्व० मगनभाई देसाई

कुछ-न-कुछ सेवा होगी ही ऐसे विश्वास से मैंने गांधीजी का आमंत्रण मान्य किया।"

मैंने मगनभाई का स्वागत किया और वे मेरे साथी बन गये। हम दोनों में अच्छा सद्भाव था और मैंने देखा कि सार्वजनिक संस्था में काम करने का व्याकरण वे अच्छी तरह से जानते हैं। किन्तु थोड़े ही दिनों में मेरा अनुभव हुआ कि वे जो कुछ कहते हैं, मैं पूरा-पूरा समझ नहीं पाता हूँ। विचार करने का उनका तरीका मैं ठीक तरह से समझ नहीं सकता। मैंने मान लिया कि शायद मेरा भाषा का ज्ञान ही अधूरा होने से मैं उनका कहना समझ नहीं पाता हूँ। हमारा परस्पर-सम्बन्ध इतना निर्मल था कि मैंने उन्हें मेरी कठिनाई समझा दी। मेरी बात वे समझ गये। इससे हमारे बीच कोई अन्तर भी पैदा नहीं हुआ, लेकिन हम समय-समय पर अनेक बातों की चर्चा करने लगे। हमने देखा कि आदर्श के बारे में हमारा पूरा मतैक्य है; लेकिन हर सवाल की ओर देखने की दृष्टि में कुछ मौलिक भेद है। लेकिन हमारे काम में कभी भी कुछ कठिनाई या बाधा न आयी। मैं पूरे विश्वास से उनको काम सौंपता गया और वे मुझे सन्तोष देते रहे।

जब गांधीजी की स्वराज्य-साधना में आश्रम के सब लोगों को और विद्यापीठ के अध्यापकों को जेल भेजने की नौबत आयी, तब मैंने स्वयं जेल जाने के पहले आज्ञा दे रखी कि सब लोग जेलयात्रा कर सकते हैं। अपवाद सिर्फ दो व्यक्तियों का—मगनभाई देसाई और जीवणजी देसाई। इसका कारण बताते हुए मैंने कहा—

जब लड़ाई छिड़ती है तब मामूली अनेक संस्थाएँ बन्द की जाती हैं, लेकिन युद्ध के शस्त्रास्त्र बनाने का कारखाना बन्द नहीं हो सकता। सैनिकों को गोलियाँ, बारूद और कारतूस न मिले तो केवल बन्दूक लेकर वे कैसे लड़ेंगे? 'नवजीवन' साप्ताहिक हमारी 'एम्युनिशन फैक्टरी' है। उसे चलाने का भार मैं मगनभाई और जीवणजी पर सौंप देता हूँ। इसलिए उन्हें जेल जाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। सरकार ही उन्हें उठाकर ले जाय तो बात अलग है। मेरी बात दोनों देसाई समझ गये और प्रसन्नता से उसका उन्होंने पालन किया।

सर्वधर्म-समभाव अथवा समन्वय आश्रम का एक महत्त्व का व्रत है। इसके लिए उपयोगी साहित्य तैयार करना चाहिए। मगनभाई को इस विषय में काफी दिलचस्पी थी। इसलिए उन्होंने कई छोटी-छोटी किताबें तैयार कीं।

एक दिन महात्माजी के साथ मैं अन्ध-जगत् की एक अमेरिकन नेत्री, हेलन केलर के बारे में बातचीत कर रहा था तब गांधीजी ने कहा, मैंने उसका जीवन-चरित्र पढ़ा है। गुजराती में वह आना चाहिए। मैंने वह काम मगनभाई को सौंपा। तुरन्त उन्होंने मुझे साहित्य तैयार करके सौंप दिया। ↦

www.vinoba.in

सामयिक चर्चा

मध्यावधि चुनाव परिणामों की विविध व्याख्याएँ

चुनाव को लोकतांत्रिक शासन-पद्धति की नब्ज कहा जा सकता है। जैसे नाड़ी की गति बन्द होने से जीवन की समाप्ति का बोध होता है, वैसे ही जिस शासन-व्यवस्था में जनता को स्वतंत्रतापूर्वक अपना वोट इस्तेमाल करने का अवसर नहीं होता उसे लोकतांत्रिक शासन नहीं कहा जाता। इसीलिए लोकतांत्रिक शासन में नागरिक का वोट का अधिकार अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

गत फरवरी महीने के प्रथम तथा द्वितीय सप्ताह में भारत के चार मुख्य प्रदेशों में मध्यावधि चुनाव सम्पन्न हुए। चुनावों के परिणाम को दर्शानेवाली दलीय और प्रदेशवार सारणी आगे दी गयी है। इन परिणामों पर भारत के प्रमुख समाचार-पत्रों में जो प्रतिक्रिया प्रकट हुई, वह विविध पहलुओं को उजागर करती है। आगे हम कुछ चुने हुए समाचार-पत्रों के अग्रलेखों के अंश प्रस्तुत कर रहे हैं।

'स्टेट्समैन' (दिल्ली) १३ फरवरी '६९ के सम्पादकीय में कहा गया है : "मध्यावधि चुनाव की एक मुख्य विशेषता यह मानी जा सकती है कि इसके कारण चारों प्रदेशों में जनसंघ की उत्तर भारत की मुख्य राजनीतिक शक्ति बनने की आशा को गहरा आघात लगा है। सं० सो० पा० को भी क्षति पहुँची है, लेकिन उसकी पराजय के लिए पार्टी की भीतरी कशमकश उतनी ही जिम्मेदार है, जितनी उसके नेताओं द्वारा जनता में प्रदर्शित सस्ती नेतागिरी।...जिन पार्टियों का गहरा स्थानीय प्रभाव था उनका महत्त्व बढ़ता जा रहा है, यह मध्यावधि चुनाव का एक चिन्ताजनक पहलू है। पंजाब में अकाली दल के नेतृत्व के सामने आने और कुछ हद तक उत्तर प्रदेश में भा० क्रां० द० का चौधरी चरण सिंह के नेतृत्व में उभरने से (और मद्रास में द्र० मु० क० है ही) अखिल भारतीय स्तर के दलों के समर्थकों की तादाद कम होगी।"

दिल्ली के अंग्रेजी दैनिक 'टाइम्स आफ इण्डिया' के १४ फरवरी '६९ के अग्रलेख में कहा गया है : "उत्तर प्रदेश में कांग्रेस अभी भी मामूली बहुमत हासिल कर सकती है। अगर उसे बहुमत नहीं भी प्राप्त होता है, और भले ही उसके कई बड़े नेता चुनाव में हार गये हों, फिर भी उसकी चुनाव में प्राप्त सफलता की रोशनी को ढँका नहीं जा सकता। वर्षों से चली आ रही आपसी दलबन्दी की लड़ाई और चरण सिंह के नेतृत्व में एक शक्तिशाली गुट के कांग्रेस के बाहर निकल जाने के कारण कांग्रेस लोगों की निगाह में बहुत नीचे गिर गयी थी। उसी कांग्रेस ने इस मध्यावधि चुनाव में सन् १९६७ के मुकाबले एक दर्जन से अधिक सीटें प्राप्त कीं।... ऐसा लगता है कि सन् १९६७ के चुनाव में मुसलमान मतदाताओं का जो वोट मामूली शिकायतों के कारण कांग्रेस को नहीं मिल पाया था, वह इस बार कांग्रेस को पुनः प्राप्त हुआ है, क्योंकि कांग्रेस ही अब अल्पमत के लोगों की सुरक्षा और समृद्धि का सबसे मजबूत आश्वासन है।"

मद्रास के अंग्रेजी दैनिक 'दी हिन्दू' ने अपने अग्रलेख में लिखा है : "जिन चार बड़े प्रदेशों में अभी-अभी छोटा आमचुनाव समाप्त हुआ है, उसके नतीजों से कांग्रेस के उन लोगों को भी जो अत्यधिक निराशावादी हैं, बड़ा आश्चर्य होना चाहिए। यह दल जिसने सभी प्रदेशों में २० वर्ष तक शासन किया और सन् १९६७ के आम चुनाव में जिसे पाँच प्रदेशों के शासन से हाथ धोना पड़ा, उसकी हालत तीन प्रदेशों में और नीचे गिरी है। यद्यपि उत्तर प्रदेश में जो सभी प्रदेशों में आबादी की दृष्टि से बड़ा है, कांग्रेस की स्थिति कुछ सँभली है। कांग्रेस की यह हार एक हद तक उसकी दोषपूर्ण चुनाव रणनीति का नतीजा है। पंजाब में इसके मतदाताओं की तादाद तो बढ़ी है, लेकिन सन् १९६७ की तुलना में इसे इस चुनाव में १० सीटें कम प्राप्त हुई हैं। यह एक निर्णीत तथ्य है कि जबतक यह दल अकेले ही चुनाव लड़ने की परिपाटी अपनाये रहेगा, जब कि इसका विरोध करनेवाले दूसरे दल आपस में चुनाव-समझौता करके अपनी विजय की सम्भावना बढ़ाते रहेंगे, तबतक इसे बराबर कम ही सीटें मिलते रहना निश्चित-सा है। यद्यपि पिछले आम चुनाव की तुलना में इस बार कांग्रेस-विरोधी वातावरण कुछ कम हुआ है, फिर भी

→ मैं जानता था कि मगनभाई वेदान्त के उपासक हैं, परिणीत होते हुए भी ब्रह्मचर्य के उपासक हैं। अध्यात्म विद्या का उनका गहरा अध्ययन है। इसीलिए इस विषय पर भी हमारी अनेक बार चर्चा होती थी, अथवा कोई नया विचार सूझा तो स्वयं आकर अपनी बात विस्तार से मुझे समझाते थे। उनके स्वभाव में चर्चा और विवेचन का माद्दा काफी था तो भी अनेक लोगों का प्रेम और निष्ठा हासिल करने की उनमें शक्ति भी थी। स्वराज्य के आन्दोलन में आश्रम और विद्यापीठ का जब संकोच हुआ तब मगनभाई ने अपनी स्वतंत्र प्रवृत्ति चलायी। गुजरात की स्वराज्य-सरकार ने जब गुजरात युनिवर्सिटी की स्थापना की तब वहाँ मगनभाई ने उपकुलपति का काम किया। भिन्न मत के लोगों के पास से काम लेते उनकी अच्छी कसौटी हुई। उनका अनुभव भी बड़ा।

अभी-अभी उन्होंने 'सत्याग्रह' नाम का एक साप्ताहिक शुरू किया था। उसमें उनकी स्वतंत्र वृत्ति और निडर नीति का उन्होंने अच्छा परिचय दिया था।

इस नैष्ठिक ब्रह्मचारी का स्वास्थ्य था तो अच्छा। रहते थे प्रसन्नता से। पता नहीं, इनको यकायक दिल का दौरा कैसे हुआ? वर्तमान युग का जीवन ही ऐसा जटिल है कि पता नहीं चलता कि आबोहवा, आहार, रहन-सहन और सामाजिक वायुमण्डल का शरीर-व्यापार पर कैसा और कितना असर होता है। गांधीजी से सीधी प्रेरणा पाकर समाज की विविध सेवा करनेवाले निष्ठावान सेवकों की संख्या घटती जा रही है, यह तो प्रकृति के नियम के अनुसार ही हो रहा है। गांधीजी की अध्यात्मनिष्ठा और कार्य-परम्परा चलानेवाले नये-नये लोग तैयार होने चाहिए, जो भूतकाल के प्रति आदर रखते हुए वर्तमानकाल को अच्छी तरह से पहचानें और अपनी सारी निष्ठा भविष्यकाल के निर्माण में लगा दें।•

www.vinoba.in

कांग्रेस का वही हाल है। उत्तर प्रदेश को सन् १९६७ में १९९ सीटें मिली थीं और इस बार २११ सीटें मिली हैं। यह बात भी उपरोक्त तथ्य की पुष्टि करती है, क्योंकि इस बार उत्तर प्रदेश में जनसंघ, भारतीय क्रान्ति दल आदि विरोधी दलों ने चुनाव अलग-अलग लड़ने का निश्चय किया, इसलिए वे कांग्रेस के मुकाबले कम सफल हुए।

बिहार तथा बंगाल में जो परिणाम सामने आया है, उससे इस तथ्य की और अधिक पुष्टि होती है। बंगाल में सन् १९६७ के आम चुनाव के बाद संयुक्त मोर्चा बना था। वह मोर्चा इस चुनाव के पहले ही बना लिया गया, इसलिए मोर्चे को बड़ा लाभ मिला। जब विरोधी दल अलग-अलग चुनाव लड़ते थे तो कांग्रेस अपने अल्पमत मतदाताओं के बल पर अधिकांश सीटें जीत लिया करती थी, क्योंकि विरोधियों की शक्ति बिखर जाती थी। विरोधी पक्ष मिलकर कांग्रेस के खिलाफ जो संयुक्त मोर्चा बना लेते हैं, उसका सामना करने की दृष्टि से जबतक कांग्रेस कोई नया और असरदार उपाय नहीं ढूँढ़ लेती तबतक इसकी शक्ति और कमजोर ही होती जायेगी। पिछले चुनाव के बाद संयुक्त मोर्चा की सरकारों ने जिस ढंग का कुशासन किया उससे कांग्रेस ने कोई लाभ नहीं उठाया है यह साफ जाहिर है।"

दिल्ली से प्रकाशित होनेवाले अंग्रेजी साप्ताहिक 'मेनस्ट्रीम' के सम्पादक ने अपने २४ फरवरी, '६९ के अंक में लिखा है :

"पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, और पश्चिमी बंगाल के हुए मध्यावधि चुनाव ने देश की लोकतांत्रिक शक्तियों को कई अच्छे पाठ पढ़ाये हैं।

जो चीज शायद बहुत खतरनाक तौर पर सामने आयी है वह यह है कि राजनैतिक दलों ने विशेष रूप से देहाती क्षेत्रों में चुनाव-अभियान चलाते समय जातियों और सम्प्रदायगत निष्ठाओं को अपने-अपने पक्ष में इस्तेमाल करने की कोशिश की। जातिगत राजनीति का जहर जो परम्परा की दृष्टि से बिहार की राजनीति में सबसे पहले प्रकट हुआ, उसने प्रच्छन्न रूप में उत्तर प्रदेश में भी अपना कुरूप चेहरा ऊपर उठाया है। मुख्य चुनाव-आयुक्त ने ठीक ही कहा है कि मतदाताओं पर नाजायज दबाव डालने की समस्या सिर्फ चुनाव-सम्बन्धी नये नियम-कानून बनाने से नहीं हल होगी, बल्कि इसके लिए दीर्घकालीन आर्थिक और राजनीतिक कदम उठाने होंगे।

गाँवों के लोगों द्वारा हरिजन मतदाताओं पर दबाव डालने के पीछे स्पष्ट रूप में कुछ आर्थिक कारण हैं। यह स्थिति इस कारण बनती है कि गाँव के जीवन में कुछ सम्पन्न किसानों का गरीब किसानों या खेती में लगे दीन-दरिद्र मजदूरों पर गहरा दबाव है। गाँव के जीवन में बैलगाड़ी की जगह ट्रैक्टर का इस्तेमाल होना जिस तरह उन्नतिशील सम्पन्न किसान का प्रतीक बन गया है, उसी तरह वह इस बात का भी प्रतीक बन गया है कि गाँव के राजनीतिक जीवन में दूसरों पर हावी होने और सतानेवाली शक्ति पैदा हुई है।

इस परिस्थिति में सबसे नुकसानदेह बात यह है कि बावजूद इसके कि देश आधुनिक आर्थिक व्यवस्था की ओर काफी आगे बढ़ा है, राजनैतिक जीवन में जातिवाद का असर लगातार बढ़ता जा रहा है। यह ठीक है कि जमींदारी के समय का सामंतशाही ढाँचा टूटा है, लेकिन उसकी पृष्ठभूमि में मौजूद जातिगत संचेतना को उन लोगों द्वारा बल प्राप्त हुआ, जो आज निहित स्वार्थ के शक्तिशाली वाहक बने हुए हैं।

यह एक ध्यान देने लायक तथ्य है कि जातीय राजनीति को उन्हीं क्षेत्रों में नयी जिन्दगी हासिल हुई है जहाँ कमजोर पड़ती हुई कांग्रेस और जनसंघ जैसे दक्षिण पंथी तत्वों या दलों के बीच सत्ता हासिल करने का संघर्ष छिड़ा। इसके साथ ही यह भी कम महत्त्व की बात नहीं है कि पश्चिमी बंगाल जैसे क्षेत्र में जहाँ कांग्रस को वामपंथी तत्त्वों की चुनौती स्वीकार करनी पड़ी वहाँ जातिगत निष्ठाओं का इस्तेमाल करना बहुत कठिन साबित हुआ। इससे साफ-साफ जाहिर होता है कि प्रगतिशील राजनीति का प्रभाव जैसे-जैसे बढ़ेगा वैसे-वैसे प्रतिक्रियावादी राजनीति द्वारा जाति और सम्प्रदाय को उकसाने की संभावना कम होती जायेगी और अन्ततः विशुद्ध वामपंथ की सफलता ही जातीय राजनीति का अभिशाप हमेशा के लिए दूर करेगी।

—रुद्रमान

मध्यावधि चुनाव-परिणाम

	उत्तर प्रदेश	पंजाब	बिहार	प० बंगाल
कुल सीटें	४२५	१०४	३१८	२८०
परिणाम घोषित	४२५	१०३	३१५	२८०
कांग्रेस	२११	३८	११८	५५
जनसंघ	४९	८	३४	—
स्वतंत्र	५	१	३	—
कम्युनिस्ट पार्टी (दक्षिण)	४	३	२५	३०
कम्युनिस्ट पार्टी (वाम)	१	२	३	८०
प्र० सो० पा०	३	१	१७	५
सं० सो० पा०	३३	२	५१	९
भा० क्रां० द०	९९	—	६	—
अकाली	—	४३	—	—
बंगला कांग्रेस	—	—	—	३३
दूसरे दल	२	१	३९	५७
निर्दलीय	१८	४	१९	११

www.vinoba.in

जिलादान के बाद : प्रयोगात्मक कार्यों का एक वर्ष

फरवरी, १९६७ में जब दरभंगा जिले का ग्रामदान हुआ, तब विनोबाजी ने श्री धीरेन्द्रभाई को बुलाया। उन्होंने कहा : "मेरा काम समाप्त और आपका काम प्रारम्भ।" उस समय श्री धीरेन्द्रभाई इलाहाबाद जिले के बरनपुर गाँव में रहते थे। उनको वहाँ के काम से मुक्त होकर आने में छः महीने लगे, और अगस्त में दरभंगा चले आये। प्रारम्भ में, खादी-ग्रामोद्योग संघ रहिका केन्द्र में अपना आश्रम बनाया, ताकि वहाँ रहकर आगे का कार्यक्रम निश्चित कर सकें।

पहला चिन्तन ग्रामदान-प्राप्ति के बाद के कार्यक्रम पर रहा। उसके लिए तीन काम साथ-साथ चलने चाहिए, ऐसा सोचा गया :

(१) प्राप्त ग्रामदानों को ग्रामदान-अधिनियम के अनुसार पुष्ट कराना तथा ग्रामसभाओं का गठन करना;

(२) जनता में ग्रामस्वराज्य के विचार-शिक्षण का काम करना; और

(३) लम्बे अर्से तक ग्रामदानी गाँवों के लोगों को विचार-शिक्षण तथा ग्रामस्वराज्य की स्थापना में उनका मार्गदर्शन करने के लिए स्थायी लोकसेवकों का संयोजन।

पुष्टि का काम करने के लिए खादी-ग्रामोद्योग संघ के जिन कार्यकर्ताओं ने प्राप्ति का काम किया है, वे ही इसमें सफल हो सकेंगे, ऐसा माना गया और इस काम के लिए सर्व सेवा संघ की ओर से श्री जयप्रकाश बाबू की अध्यक्षता में जिला ग्रामस्वराज्य समिति का संगठन किया गया। ग्रामदान-पुष्टि तथा लोक-शिक्षण का काम इस समिति के जिम्मे रहा।

विनोबाजी की प्रेरणा से तथा जयप्रकाश बाबू की अपील पर देश के कुछ विशिष्ट कार्यकर्ता, जो लोक-शिक्षण के काम के योग्य हैं, जिले के एक-एक प्रखण्ड की जिम्मेवारी लेने के लिए अग्रसर हुए। जिला समिति इसका संयोजन करती रही।

श्री धीरेन्द्रभाई ने उपरोक्त दो कामों के लिए जिला समिति को मार्गदर्शन करना अपनी जिम्मेवारी माना और उसके लिए जिला समिति के अन्तर्गत शिविरों और गोष्ठियों में अपना समय देते रहे। तीसरे काम के लिए कुछ ठोस आधार निर्माण करना होगा, ऐसा मानकर उस काम को उन्होंने अपने खुद की जिम्मेदारी पर रखा।

सर्वजन की क्रान्ति का वाहक कौन ?

ग्राम-स्वराज्य की क्रान्ति के संदर्भ में मुख्य प्रश्न क्रांति के वाहक के रूप में कार्यकर्ताओं का संगठन है, ऐसा सभी मानते हैं, लेकिन आन्दोलन की गतिविधि में अबतक उसका छोर निकल नहीं सका। जब हम इस विषय पर विचार करते हैं तो स्पष्ट होता है कि इस नयी क्रान्ति के लिए नये प्रकार के वाहन और संगठन की आवश्यकता है। हम कहते हैं कि हमारी क्रान्ति का लक्ष्य संचालित समाज-व्यवस्था के बदले स्वावलम्बी समाज-व्यवस्था की स्थापना करना है। अतः समाज के काम-काज के लिए लोग राज्य या केन्द्रित संस्था के भरोसे न रहकर सामूहिक संकल्प तथा सम्मति और परस्पर-सहकार के आधार पर ही निर्भर करें। इस दृष्टि से यह इष्ट नहीं है कि कार्यकर्ताओं की कोई केन्द्रीय संचालित जमात बने, और वह जमात जनता को साथ लेकर, क्रान्ति कर, उसे कष्ट-मुक्त करे। क्योंकि इस प्रक्रिया से स्वतंत्र लोकशक्ति का विकास न होकर, जमात-शक्ति ही पनपती है, जिसके सहारे जनता को मुक्ति मिलती है। इतिहास का अनुभव यह है कि जब क्रान्ति की सफलता से जमात के हाथ में समाज की बागडोर आ जाती है, तब वह सफलता ही जमात के लिए निहित स्वार्थ बन जाती है, और अपने हाथ में उसे कायम रखने के लिए वह जनसाधारण के कलेजे पर बैठ जाती है।

यही कारण है कि जब विनोबाजी से कहा जाता है कि वे ग्रामदानी गाँवों के निर्माण के काम में लगें तो उनका स्पष्ट उत्तर होता है : "यह मेरा काम नहीं है।" ग्रामस्वराज्य की अर्थ गाँव के लोगों को मिलकर अपना काम चलाना है। इस प्रक्रिया से वे अगर अपनी मूर्खता के कारण अपना नुकसान भी कर दें तो उनको वैसा करने देना आवश्यक है। इसलिए सर्वोदय-क्रान्ति सर्वजन से ही हो सकेगी। ग्रामस्वराज्य-आन्दोलन का यह मूल-मंत्र माना गया है। इसीकी सिद्धि में विनोबा समाज के हर तबके को इस आन्दोलन में लगाने का प्रयास कर रहे हैं।

लेकिन अति प्राचीन काल से ही जनता ने अपनी समस्याओं पर सोचना, उसका हल निकालना और अपने को चलाना अपनी जिम्मेवारी नहीं माना है। हजारों वर्षों से जनता ने यही माना कि राजा, गुरु, सन्त-महात्मा, सेवा-संस्था या किसी पार्टी को उनके लिए सोचना है और उनकी समस्याओं का समाधान खोजना है। इसलिए यद्यपि क्रान्ति-विचार के अनुसार जनता को यह अभ्यास करना है कि वह उपरोक्त किसी एजेंट के भरोसे न रहकर, सामूहिक संकल्प, सम्मति तथा परस्पर-सहकार से स्वावलम्बी बनकर वास्तविक स्वराज्य कायम करे; फिर भी, हजारों वर्षों से ऐसा अभ्यास न रहने के कारण विचार को समझते हुए भी जनता अपने अभिक्रम से आज कुछ नहीं कर पाती है। क्योंकि प्रारम्भ-काल से आज तक दूसरे के भरोसे पर रहने के कारण जनता की आत्मशक्ति शून्यवत् हो गयी है। इसलिए काफी अर्से तक जनतारूपी हनुमान को शक्ति का भान कराने के लिए देश भर में फैले हुए लोकसेवकों की आवश्यकता है।

स्वावलम्बी लोकसेवक

अब सवाल उठता है कि ऐसे कार्यकर्ताओं के जीवन का पैटर्न क्या हो ? और उनके योगक्षेम का जरिया क्या हो ? हम मानते हैं कि गाँव के सब नागरिक मिलकर गाँवों का विकास करें। अतः हम यह अपेक्षा रखते हैं कि नागरिक अपनी जीविका के लिए कृषि-मूलक ग्रामोद्योगप्रधान अर्थनीति को अपनायें और उसमें से कुछ समय निकालकर अपने गाँव की सेवा करें। इस अपेक्षा का मतलब साफ है कि कार्यकर्ता उसी प्रकार की अपनी जीविका के पैटर्न को कायम रखते हुए,

ग्रामस्वराज्य के मार्गदर्शन के लिए समय निकाले। तभी स्वतंत्र नागरिकों को प्रतीत होगा कि यह एक व्यावहारिक विचार है और तभी वे लोग बिना किसी विशिष्ट नेता या सेवक के सहारे अपना काम चलाने का संकल्प ले सकते हैं। गांधीजी ने भी ग्राम-स्वराज्य के लिए देश भर से जो सात लाख नौजवानों का आह्वान किया था, उनके लिए उन्होंने कहा था कि वे अपने श्रम तथा जनता के प्रेम से अपना गुजारा करें और समग्र ग्राम-सेवा करें, अर्थात् कार्यकर्ता स्वावलम्बी हों। इसका अर्थ हमने यह माना है कि जनता स्वावलम्बन के आवश्यक साधन प्रेमपूर्वक दे, ताकि उसके सहारे लोकसेवक स्वावलम्बी बन सके।

वैसे भी देखा जाय तो ग्रामस्वराज्य के विचार के अलावा भी लोकसेवकों के लिए यही पैटर्न आज की परिस्थिति में व्यावहारिक है। प्राचीन काल में लोकसेवक भिक्षाधारित थे। चूंकि सहूलियत की चाह प्राणीमात्र की स्वाभाविक वृत्ति है, इसलिए सेवक श्रीमानों के सहारे हो गये। फलस्वरूप वे श्रीमानों की विभिन्न हरकतों के पृष्ठपोषक हो गये। यह सही है कि कुछ विशिष्ट त्यागी और तपस्वी लोकसेवक भिक्षा के आधार पर रहकर भी सार्वजनिक प्रतिष्ठा पा सकते हैं, अपनी स्वतंत्र तेजस्विता कायम रख सकते हैं। लेकिन हमारा अनुभव यह है कि अगर वह सपरिवार होता है तो, कम-से-कम उसका परिवार धीरे-धीरे अपने आप में हीनता महसूस करने लगता है। उसकी पत्नी से दूसरी स्त्रियां कुछ कह देती हैं तो वह अपने को अपमानित स्थिति में पाती है। परिणाम यह हुआ कि इस जमाने में भिक्षा-आधारित सामान्य लोकसेवकों के प्रति जनता में बहुत अधिक आदर नहीं रह गया। अगर राज्य या संस्था के पास संचित निधि जमा करके लोकसेवकों के योगक्षेम का इन्तजाम किया भी जाता है तो इस युग में थोड़े लोगों को छोड़कर बाकी आलसी और गैरजिम्मेदार हो जाते हैं। इसलिए भी हम मानते हैं कि स्थायी लोकसेवक स्वावलम्बी नागरिक के रूप में ही स्थायी सेवा कर सकते हैं, यद्यपि हम यह भी मानते हैं कि क्रान्ति की सफलता के लिए काफी संख्या में परिव्राजकों का आवश्यकता है, जो स्वभावतः जनाधार ही होगा। लेकिन ऐसे व्यक्ति के लिए जिस पर परिवार की जिम्मेदारी है, परिव्राजक बनना कठिन है।

बरनपुर से मधुबनी

अतः जिले के नौजवानों के सामने स्वावलम्बन-साधना की दिशा स्पष्ट करने के लिए हम लोग बरनपुर (इलाहाबाद) से दरभंगा जिले में चले आये।

शुरू में, हम मधुबनी अनुमण्डल के बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ के केन्द्र रहिका में जहाँ हम लोगों को चौदह कट्ठा जमीन काम करने के लिए मिल गयी थी, रहने लगे। बाद में बिहार के मित्रों ने यह महसूस किया कि अगर श्री धीरेन्द्र भाई को दरभंगा जिले के काम के लिए सलाह देनी है तो उन्हें किसी केन्द्रीय स्थान पर रहना चाहिए। अतः हम लोग मार्च, १९६८ से मधुबनी केन्द्र में, उनकी अपनी तीन एकड़ जमीन पर तेलघानी-उद्योग के साथ स्वावलम्बन के प्रयोग में लग गये।

मधुबनी की जमीन, एक ईंट-भट्ठे का अवशेष मात्र थी, इसलिए वह जमीन बहुत ही ऊँची-नीची सतह में बँटी हुई थी। साथ ही, वर्षों से उसीके बगल से होकर रंगाई-विभाग का पानी बहते रहने के कारण कास्टिक सोडा के असर से कुछ जमीन ऊसर बन गयी थी। हमारा पहला साल जमीन की लेवलिंग, मेढ़बन्दी कर प्लाट बनाना और मिट्टी को सड़ाकर रेह के असर को कम करने में ही गया। यद्यपि धान की फसल आसपास के किसानों की दृष्टि से अच्छी थी, फिर भी स्वावलम्बन की दृष्टि से वह हानिकर ही रही; क्योंकि उसमें से मुश्किल से जमीन बनाने का तथा कृषि-खर्च ही निकल सका। लेकिन हमारी फसल को देखकर आसपास की जनता को काफी आकर्षण हुआ। फलस्वरूप वे लोग हमेशा हमसे मिलते रहते हैं और चर्चा करते रहते हैं। इस तरह हमारे स्वावलम्बन का प्रयोग ही नयी तालीम की पद्धति से लोकशिक्षण का माध्यम बनता जा रहा है। स्वावलम्बन का प्रयोग दूसरी दृष्टि से भी लोकशिक्षण का माध्यम बन रहा है।

लोकशिक्षण के लिए हमने क्या किया ?

ग्रामस्वराज्य और सर्वोदय के प्रचार-प्रसार के लिए हमको जब समय मिलता है तब हम गाँवों में चले जाते हैं। ग्राम-सम्पर्क का यह कार्यक्रम जब हम लोग रहिका में थे उस समय काफी होता था। मधुबनी शहर में आने के बाद गाँव में जाने का प्रसंग अब-तक नहीं आया है। लेकिन नगर-सम्पर्क कुछ हो रहा है।

यद्यपि हम यहाँ स्वावलम्बन का मार्ग खोजने आये हैं, फिर भी चूँकि रहिका और मधुबनी, दोनों जगहों की जमीन को ठीक करने में ही सारी शक्ति खर्च हुई, इसलिए अभी तक हम अपना खर्च जो औसत तीन परिवारों का है, बरनपुर में तीन साल में स्वावलम्बन के उपरान्त जो कुछ बचाकर रखा था, उसके तथा मित्रों के सहारे ही चला रहे हैं। अब तक की उपलब्धि को देखते हुए हम मानते हैं कि सन् १९६९ में हमें आंशिक रूप से मित्राधार पर ही रहना है और सन् १९७० से स्वावलम्बी हो जायेंगे।

स्वावलम्बी लोकसेवक के प्रश्न पर एक शंका यह उठायी जाती है कि स्वावलम्बन के साथ लोक-सम्पर्क नहीं हो सकता। पिछले छः-सात सालों तक इस प्रयोग में लगे रहने से हमारा अनुभव इससे भिन्न है। हम नहीं मानते हैं कि लोक-सम्पर्क के लिए लोकसेवकों को निरन्तर घूमते ही रहना चाहिए; बल्कि हमारा अनुभव यह है कि केवल सम्पर्क और प्रचार की अपेक्षा स्वावलम्बन के समवाय के प्रसंग के साथ लोकशिक्षण का काम अधिक ठोस, तेजस्वी और असरकारक होता है। कार्यकर्ता के प्रति जनता की भी भावना अधिक अच्छी रहती है। हम मानते हैं कि रहिका में जिस प्रकार सम्पर्क का काम शुरू हुआ था, वह सिलसिला अगर जारी रहता और हम स्थायी रूप से वहीं पर रहे होते तो अबतक काफी बड़े क्षेत्र में हमारा सम्पर्क हो चुका रहता। लेकिन मधुबनी में भी जब जमीन सुधर जायगी तो प्रसंगवश, ग्रामीण क्षेत्र में जाने का काफी अवकाश मिलेगा, क्योंकि जो लोग वहाँ आकर→

अखिल भारतीय कस्तूरबा-शिविर-सम्मेलन

कस्तूरबाग्राम (इन्दौर) में गत ५ से १२ फरवरी तक सम्पन्न हुए शिविर एवं सम्मेलन के सारे आयोजन के पीछे जिन दो बातों का पूरे शिविर एवं सम्मेलन पर प्रभाव रहा, वे थीं कस्तूरबा गांधी-स्मारक ट्रस्ट द्वारा सन् १९४५ से लेकर अबतक ग्रामीण महिलाओं और बालकों के लिए जो कार्य किये हैं, उनका मूल्यांकन करना और ट्रस्ट की भावी योजनाओं के सम्बन्ध में विचार-विनिमय करना, जिससे ग्रामीण महिलाओं को अज्ञान, निरक्षरता, गरीबी और मानसिक गुलामी से मुक्ति दिलाने के लिए नयी दिशा और प्रेरणा प्राप्त हो सके।

पूरा-का-पूरा शिविर एवं सम्मेलन इन्हीं दो बातों के इर्द-गिर्द घूमता रहा। बा-बापू का सन्देश शहर से दूर बसी हुई मूक ग्रामीण महिलाओं तक कैसे पहुँचे? बच्चों के कल्याण के लिए क्या योजनाएँ हों? स्त्री-शक्ति का जागरण कैसे हो? स्त्री-पुरुष के बीच की असमानता कैसे मिटे?—ये सब बातें उक्त दो मुख्य उद्देश्यों की सहचरी थीं।

सर्वोदय-दर्शन के सुप्रसिद्ध भाष्यकार एवं मूर्धन्य विद्वान श्री दादा धर्माधिकारी ने शिविर का उद्घाटन करते हुए कहा: "बा और बापू के नाम इस शिविर और सम्मेलन के साथ जुड़े हैं। बापू ने क्रान्ति की प्रक्रिया में एक नया आयाम जोड़ा कि जो क्रान्ति करना चाहता है, उसके जीवन में पहले क्रान्ति करनी होगी। आज विचारणीय यह है कि जो क्रान्ति करनेवाले मनुष्य होंगे, उनमें स्त्री की भूमिका क्या होगी?

"अब स्त्री के नागरिक हो जाने से स्त्री की भूमिका पुरुष के तुल्य हो गयी है। कानून जो कर सकता है, वह उसने किया है। लेकिन कानून अधिकार दे सकता है, सामर्थ्य नहीं। सामर्थ्य तो स्वायत्त होता है।"

विदेश उपमंत्री श्रीमती सरोजिनी महिषी ने कहा कि आज महिलाएँ हर बात में पुरुषों पर आश्रित हैं। मैं ऐसा नहीं मानती कि पुरुष को भगवान ने कुछ ज्यादा बुद्धि दी है और स्त्रियों को कम। परिश्रम करें तो स्त्री भी अपनी बुद्धि का विकास कर सकती है। संविधान ने स्त्री-पुरुष समानता का अधिकार अवश्य दिया है, पर ठीक ढंग से उसका उपयोग करने के लिए परिश्रम करना पड़ेगा।

मध्यप्रदेश के भूतपूर्व विकास-आयुक्त श्री प्रतापसिंह बापना ने कहा कि भारत में प्रगति जो धीमी पड़ी, उसका कारण यही था कि हम उचित जन-मानस का निर्माण करने में अक्षम रहे। वेतन पाकर गाँवों में काम करनेवाले लोग निष्ठा पैदा नहीं कर सकते। अगर गाँवों में प्रगति करना है, तो वहीं के लोगों को अपनी समस्याओं के प्रति सचेत करना होगा। सरकारी सहायता से जनमानस नहीं तैयार होगा। सरकार सिर्फ ईंट और चूने की सहायता उपलब्ध करा सकती है।

कस्तूरबा कुष्ठ-निवारण, निलयम् (तमिलनाडु) के मंत्री श्री टी० एस० जगदीशन् ने कहा कि कस्तूरबा ट्रस्ट का कार्य देश में भावनात्मक एकता की दिशा में उल्लेखनीय कार्य है। यहाँ मैं उस नारी का दर्शन कर रहा हूँ, जिसकी कल्पना महात्मा गांधी ने की थी।

उत्कल की सुप्रसिद्ध लोकसेविका माता श्रीमती रमादेवी ने अपनी उड़िया-मिश्रित हिन्दी में कहा कि बापू ने स्त्री को अपनी शक्ति का भान करवाया। उससे पहले स्त्री को मालूम नहीं था कि स्त्री में जागने पर विप्लव करने व परिवर्तन लाने की शक्ति है।

सुप्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्त्री एवं केन्द्रीय समाज-कल्याण बोर्ड की भूतपूर्व अध्यक्षा श्रीमती दुर्गाबाई देशमुख ने शिविर का समारोप करते हुए कहा कि शासकीय स्तर पर किया गया कार्य गांधीजी को जीवित नहीं रख सकेगा। गांधी-शताब्दी-पर्व के लिए किये गये कार्य कहीं ऐसा न हो कि २ अक्तूबर को खत्म हो जायँ और हम शताब्दी-वर्ष के बाद गांधीजी को जीवित न रहने दें! जबतक गांधी-शताब्दी के साथ सरकारी मशीनरी जुड़ी है, तबतक गांधी-शताब्दी-वर्ष में किसी खास तरक्की की मैं आशा नहीं रखती। मैं जनशक्ति में विश्वास रखती हूँ और विचारपूर्वक जनशक्ति के आधार पर ही गांधी-शताब्दी कार्यक्रम को सफलतापूर्वक मनाया जा सकता है।

केन्द्रीय गांधी-स्मारक-निधि के मंत्री श्री देवेन्द्रकुमार गुप्त ने कहा कि आज जमाने की सबसे बड़ी माँग है समाज में स्त्री-पुरुष अभेद की स्थापना करना, और वही कस्तूरबा-कार्य का मुख्य उद्देश्य है।

भूतपूर्व केन्द्रीय स्वास्थ्य-मंत्री और महिला एवं बाल-कल्याण समिति की अध्यक्षा डा० सुशीला नैयर ने कहा कि हमें बा और बापू का सन्देश उन लोगों तक पहुँचाना है, जिन तक वह नहीं पहुँचा है। कस्तूरबा का मुख्य कार्य तो स्त्री-शक्ति का जागरण है।

भूतपूर्व केन्द्रीय वित्तमंत्री श्री चिन्तामणि देशमुख ने कहा कि गांधी-शताब्दी-वर्ष एक ऐसा अवसर है, जब हम विचार कर सकते हैं कि गांधीजी और कस्तूरबा की स्मृति में ऐसे कौन-कौनसे कार्यक्षेत्र हैं, जिनमें हमें कार्य करना है।

गांधी-जन्म-शताब्दी समिति की जनसम्पर्क उपसमिति के मंत्री श्री एस० एन० सुब्बाराव, भूतपूर्व केन्द्रीय उप-विदेशमंत्री श्रीमती लक्ष्मी मेनन, सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री मनमोहन चौधरी और श्रीमती मदालसा नारायण ने कहा कि छोटे बालकों को राष्ट्रपिता से परिचित कराने के लिए देश की भिन्न-भिन्न भाषाओं में पुस्तकें प्रकाशित करनी चाहिए और गीतों-भजनों के माध्यम से भी सन्देश पहुँचाये जाने चाहिए।

शताब्दी-वर्ष की समाप्ति के बाद भी हमारा कार्य स्थायित्व को प्राप्त हो जाय, ऐसी कोशिश की जानी चाहिए। बा-बापू के

→हमसे चर्चा करते हैं, वे सब ग्रामीण किसान ही हैं।

श्रमभारती का एक विशेष काम यह भी है कि आन्दोलन में लगे पुराने कार्यकर्ता यहाँ आकर सर्वोदय-विचार तथा व्यवहार का प्रशिक्षण हासिल करें। ऐसे प्रशिक्षण-शिविरों तथा 'स्वल्प प्रशिक्षण कोर्स' के द्वारा करने की कोशिश की जाती है। अबतक, तीन माह का एक प्रशिक्षण-शिविर और एक-एक सप्ताह का एक शिविर हुआ है। इस वर्ष ऐसा शिविर हर माह में चलाने का निश्चय किया गया है।

—श्रीनारायण
आचार्य, श्रमभारती
मधुबनी (दरभंगा)

ऊपरी स्मारक बनाने के स्थान पर उनके स्मारक हृदयों में बनाये जाने चाहिए।

www.vinoba.in

श्रीमती लक्ष्मी मेनन के इस प्रस्ताव का स्वागत किया गया व उसे स्वीकृत किया गया कि २२ फरवरी, बा-पुण्यतिथि को 'मातृदिवस' के रूप में मनाया जाय। इस दिन विशेष कार्यक्रम रखकर अपनी माताओं के प्रति प्रतिष्ठा ज्ञापित की जाय।

अ० भा० शान्ति-सेना विद्यालय की संचालिका सुश्री निर्मला देशपांडे ने कहा, "हिंसा, भय और द्वेषग्रस्त संसार में जहाँ कहीं भी अहिंसा के माध्यम से काम किया जाता है, उसे गांधी-काम की संज्ञा दी जाती है। इसीलिए अमेरिका में डा० मार्टिन लूथर किंग और इटली में दानीलो डोलची को वहाँ के लोग गांधी कहने हैं। नोआखाली में बापू के चरण-चिह्नों से जो राह बन गयी है, उसका हम अनुसरण करें, तो बा-बापू की शताब्दी का यह वर्ष सार्थक हो सकता है।"

सम्मेलन का समारोप करते हुए उप-प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई ने कहा कि वह समाज कभी बहादुर व निर्भय नहीं हो सकता, जिस समाज में स्त्रियाँ अपने मौलिक अधिकारों से वंचित हैं। स्त्री सारे समाज को शक्ति दे सकती है। वह सेवा की मूर्ति है। उस पर जुल्म करने के बावजूद वह सेवा करती रहती है। स्त्री में समाज-संगठन के गुण पुरुष की अपेक्षा अधिक हैं।

ट्रस्ट की पूर्वराशि कुछ प्रान्तों को छोड़कर समाप्त होने को है। ५० लाख रुपये की एक नयी राशि एकत्र करने की जानकारी के साथ ही श्री विट्ठलदास ठाकुरसी ट्रस्ट द्वारा १ लाख, जाल ट्रस्ट द्वारा ५० हजार, श्री सोहनलाल सांघी द्वारा ५ हजार की राशि ट्रस्ट को दान में प्राप्त होने की घोषणा भी कम प्रेरणास्पद नहीं रही। उसका करतल-ध्वनि के साथ स्वागत किया गया

शिविर एवं सम्मेलन में निम्नलिखित सुझाव दिये गये :

• ट्रस्ट-केन्द्रों के कार्य के साथ-साथ महिला-जागरण एवं ग्राम-स्वराज्य-अभियानों का संयोजन किया जाय।

• ट्रस्ट के लिए दिये गये सुझावों को मान्यता देते हुए महिला लोकयात्रा—जैसे कार्यक्रमों को स्वतंत्र रूप में व ट्रस्ट के साथ सहयोग से चलाया जाय।

• देश में व्याप्त हिंसा के शमन के लिए सब स्तरों पर शान्ति-सेना का संगठन किया जाय एवं हर प्रान्त में ट्रस्ट के द्वारा संचालित सब प्रकार के विद्यालयों में शान्ति-सेना-प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाय।

• ग्रामदानी क्षेत्र में, ग्रामसभाओं के कार्य में महिलाओं का विशेष योगदान हो, उसके लिए विशेष प्रयास किया जाय।

• स्त्री की मानवीय एवं नागरिकता की प्रतिष्ठा को स्थापित करने के लिए अशोभनीय पोस्टर, अश्लील साहित्य, सिनेमा तथा विज्ञापन आदि के द्वारा स्त्री का जो अपमान हो रहा है, उसके खिलाफ आन्दोलन किया जाय।

• महिलाओं को सम्मानपूर्वक रोटी-रोजी प्राप्त हो, इसलिए हर परिवार में कम-से-कम २० रुपये की खादी पहुँचाने का व्यापक अभियान किया जाय।

• पाकिस्तान तथा अन्य पड़ोसी देशों की महिलाओं को गांधी-शताब्दी का संदेश सुनाने के लिए भारत की महिलाओं के प्रतिनिधि-मंडल भेजे जायँ।

• अस्पृश्यता-निवारण और पूर्ण नशाबंदी हेतु व्यापक आन्दोलन किये जायँ।

—अवधकुमार गर्ग की रिपोर्ट से

एक अनूठी कलाकृति

श्री नारायण देसाई की 'संत सेवता सुकृत वाधे' मूल गुजराती में पढ़ी। एक अनूठी कलाकृति है। उसमें आत्मकथा की सजीवता और प्रतीति है। फिर भी अहन्ता का दर्प नहीं है। जिन घटनाओं और परिस्थितियों का वर्णन इस छोटी-सी पुस्तक में है, उनके साथ लेखक का घनिष्ठ और प्रत्यक्ष सम्बन्ध रहा है। वह केवल एक तटस्थ प्रेक्षक नहीं रहा है। कई प्रसंगों में उसकी अपनी भूमिका भी महत्त्वपूर्ण है। परन्तु अन्य व्यक्तियों की भूमिका का चित्रण करने में उसने अपने को गौण स्थान ही दिया है। लेखक की सदभिरुचि का यह द्योतक है।

'मोहन और महादेव' इस सुन्दर पुस्तक की दो विभूतियाँ हैं। 'हरिहर' की तरह उनका विभूतिमत्व अविभाज्य है। अनेक घटनाओं और प्रसंगों के चित्रण में नारायण भाई ने उस विभूतिमत्व की जो झांकियाँ दिखाई हैं, वे नितान्त मनोज्ञ हैं। साबरमती और सेवाग्राम आधुनिक भारत के विश्वतीर्थ माने जाते हैं। वहाँ के आंतरिक जीवन के जो दर्शन इस पुस्तक में कराये गये हैं और जिस रुचिर शैली में कराये गये हैं, वह हृदयस्पर्शी है। नारायण भाई की भाषा में एक अनलंकृत लावण्य है। पृष्ठ २९ और ३० पर लेखक के मानस पर जो छाप पड़ी, उसकी उपमा उसने कृष्ण पक्ष के नभोमण्डल से दी है। पुस्तक में करुण, उदात्त आदि रसों के साथ-साथ ऋजु और सौजन्ययुक्त विनोद की घटाएँ भी हैं, जो उसे अधिक चित्ताकर्षक बनाती हैं। लेखक की सहृदयता की छाप तो पृष्ठ-पृष्ठ पर है।

पुस्तक का हिन्दी भाषान्तर हमारे मित्र श्री दत्तोबा दास्ताने ने किया है। दत्तोबा का 'उपनयन' पवनार के सन्त ने किया है। उनके जीवन में जो संस्कारिता और प्रगल्भता है, वह विनोबा के साथ दीर्घ सहवास का परिपाक है। नारायण भाई को भाषान्तरकार भी समानशील मिले। पाठक की दृष्टि से यह बड़ा ही शुभ संयोग है। गांधी की विभूति की विविधता की झाँकी जो देखना चाहते हों, उनके लिए यह पुस्तक निःसन्देह उपादेय है।

२०-१-१९६९ —दादा धर्माधिकारी

[श्री नारायण देसाई की नयी पुस्तक : "बापू की गोद में" की प्रस्तावना। प्रकाशक : सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी; मूल्य २॥ रुपया]

www.vinoba.in

'भूदान-यज्ञ' : नाम-चर्चा

महोदय,

१३ जनवरी के 'भूदान-यज्ञ' में एक साथी ने 'भूदान-यज्ञ' जैसे नाम के स्थान पर 'ग्रामदान महायज्ञ' जैसा नाम दिया जाय, ऐसी इच्छा प्रकट की है। अतः इसी सन्दर्भ में मैं अपना विचार स्पष्ट कर रहा हूँ। भूदान एक बीज है, जिसका विकास होते-होते ग्रामदान की भूमिका स्पष्ट हुई है। ग्रामदान के सन्दर्भ में भूदान ही कपड़े के ताने-बाने की तरह ओतप्रोत है और यदि ग्रामदान से इसे पृथक् किया जाय तो ग्रामदान का वास्तविक मूल्य ही समाप्त होगा।

'भूदान' शब्द में इतनी व्यापकता है कि वह समस्त जगत् को अपने में आत्मसात करता है, जिसके दायरे से गाँव के अतिरिक्त नगर भी बाहर नहीं जा सकते। भूदान-यज्ञ वैदिक शब्द है, जो अति प्राचीन है, बदलते युग की परिस्थिति में अपना नया अर्थ धारण कर जनमानस को प्रेरित करता है। अतः इसकी रक्षा करनी है, इसके अभाव में हम शब्द-शक्ति को ही खो बैठेंगे। —शिवनारायण शास्त्री

मथुरा, २०-१-'६९

महोदय,

मैंने जब 'भूदान-यज्ञ' मँगाना शुरू किया तो मेरी सहेलियों और कुछ बहनों ने पूछा कि यह क्यों मँगाती हो? इसमें तो जगह-जमीनदान करने की खबर रहती है। मैंने उन्हें समझाया कि संकटग्रस्त संसार का उद्धार जिससे सम्भव है वही पैगाम इस पत्रिका में रहता है। जीवन का एक मुख्य मसला है जमीन का। यही खेत-पथार का प्रबन्ध अफसर के द्वारा न हो, प्यार से ग्रामीणों के द्वारा हो।

मेरी राय है कि जब खाली खेत के दान-दक्षिणा का किस्सा इसमें नहीं है, एक सर्वगुण-सम्पन्न समाज की स्थापना का सन्देश है तो एकांगी नाम 'भूदान-यज्ञ' हटाकर सार्थक अधिक सुहावन, अतिमनभावन नाम रखा जाय और वह 'ग्रामदान महायज्ञ' ही है, ताकि सभी वर्ग (नर-नारी) के लोग नितधर्म की तरह इसका पठन-पाठन कर सकें और आन्दोलन में गति आये।

विष्णुपुर, मुंगेर —फूलमणि

२२-१-'६९

हिंसात्मक खूनी क्रान्ति एवं गांधीजी

गांधीजी ने कहा था :

"आर्थिक समानता के लिए काम करने का मतलब है पूंजी और श्रम के बीच के शाश्वत संघर्ष का अन्त करना। इसका मतलब जहाँ एक ओर यह है कि जिन थोड़े-से अमीरों के हाथ में राष्ट्र की सम्पदा का कहीं बड़ा अंश केन्द्रीभूत है उनके उतने ऊँचे स्तर को घटाकर नीचे लाया जाय, वहाँ दूसरी ओर यह कि अध-भूखे और नंगे रहनेवाले करोड़ों का स्तर ऊंचा किया जाय। अमीरों और करोड़ों भूखे लोगों के बीच की यह चौड़ी खाई जब तक कायम रखी जाती है तब तक तो इसमें कोई सन्देह ही नहीं कि अहिंसात्मक पद्धतिवाला शासन कायम हो ही नहीं सकता। स्वतंत्र भारत में, जहाँ कि गरीबों के हाथ में उतनी ही शक्ति होगी जितनी कि देश के बड़े-बड़े अमीरों के हाथ में, वैसी विषमता तो एक दिन के लिए भी कायम नहीं रह सकती, जैसी कि नयी दिल्ली के महलों और यहीं नजदीक की उन सड़ी-गली झोंपड़ियों के बीच पायी जाती है, जिनमें मजदूर-वर्ग के गरीब लोग रहते हैं। हिंसात्मक और खूनी क्रान्ति एक दिन होकर ही रहेगी, अगर अमीर लोग अपनी सम्पत्ति और शक्ति का स्वेच्छापूर्वक ही त्याग नहीं करते और सबकी भलाई के लिए उसमें हिस्सा नहीं बंटाते।"

देश में दंगे-फसाद और खून-खराबी का वातावरण बढ़ता जा रहा है। इसमें आर्थिक, सामाजिक विषमता भी बड़ा कारण है। गांधीजी की उक्त वाणी और चेतावनी आज अधिक ध्यान देने को बाध्य करती है। क्या देश के लोग, विशेषतः अमीर, समय के संकेत को पहचानेंगे?

गांधी रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति (राष्ट्रीय गांधी-जन्म-शताब्दी समिति), दुंकलिया भवन, कुन्दीगरों का भैरू, जयपुर-३ राजस्थान द्वारा प्रसारित।

तंजौर में शान्ति-कार्यक्रम का अभिक्रम

www.vinoba.in

दक्षिण भारत की प्रसिद्ध नदी कावेरी तमिलनाडु प्रदेश के तंजौर जिले से बहती है। कावेरी नदी के पानी से तंजौर जिले की लगभग १५ लाख एकड़ कृषि-भूमि की सिंचाई होती है। इसके ही कारण तंजौर जिले को तमिलनाडु का धान्य-भण्डार होने का गौरव प्राप्त है। लेकिन वहाँ के लिए दुर्भाग्यजनक बात यह है कि जमींदारों और किसानों के अमैत्रीपूर्ण सम्बन्धों के चलते वहाँ विद्वेष और पारस्परिक हिंसा का ऐसा प्रवाह फूट पड़ा है, जिसका वहाँ के कृषि-उत्पादन पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है। पिछले महीनों में वहाँ कई हत्या की घटनाएँ हुई हैं और हाल ही में ४२ निर्दोष प्राणियों को जीवित जला देने की दर्दनाक घटना भी घटी है। जलनेवालों में मुख्यतः हरिजन स्त्रियाँ और बच्चे थे।

जैसा कि ऊपर से दीखता है वहाँ की इस समस्या के मूल में सिर्फ मजदूरी बढ़ाने की बात नहीं है। वहाँ के जमींदार बाहर से मजदूर बुलाकर फसल काटने की मजदूरी के रूप में स्थानीय माप से साढ़े चार लिटरोस अनाज देने लगे। कम्युनिस्टों के नेतृत्व से प्रभावित किसानों ने हिंसात्मक कार्रवाइयाँ करते हुए ६ लिटरोस मजदूरी की माँग की। तंजौर की इस समस्या की जड़ें वहाँ गहराई तक घुसी हुई हैं। दरअसल यह सामंतवादी जमाने की व्यवस्था और क्रान्ति के लिए सिर उठानेवाली नयी शक्तियों के बीच की कशमकश है।

तंजौर की इस समस्या का यदि शान्तिपूर्ण समाधान नहीं ढूँढ़ लिया जाता तो वहाँ का वातावरण और भी अधिक हिंसापूर्ण होता जायेगा और वह पूरे तमिलनाडु में फैल जायेगा।

तमिलनाडु सर्वोदय मण्डल और तमिलनाडु सर्वोदय संघ ने तत्काल अपनी संयुक्त बैठक करके निम्नलिखित कार्यक्रम निर्धारित किया :—

१. पूरे तंजौर जिले के बारहों तालुके में एक-एक शान्ति-केन्द्र स्थापित करके प्रत्येक केन्द्र के लिए पूरे समय का एक शान्ति-सेवक नियुक्त करना।

२. प्रत्येक शान्ति-केन्द्र के इर्दगिर्द के कम-से-कम एक सौ युवकों को शान्ति-सेना का प्रशिक्षण देना। यह प्रशिक्षण ५०-५० की दो टोलियों में होगा।

३. विश्व-शान्ति तथा अन्य समस्याओं के लिए अहिंसक समाधान प्राप्त करने की जानकारी के लिए सेमिनार (अध्ययन-गोष्ठियाँ) आयोजित करना।

४. क्षेत्र में पदयात्राओं का आयोजन करके लोगों से शान्तिपूर्वक जीने और ग्रामदान स्वीकार करने की अपील करना।

५. गांधीजी की अहिंसक कार्यप्रणाली का लोगों में प्रचार करने के लिए, सभा, सांस्कृतिक कार्यक्रम, और नाटक इत्यादि का आयोजन करना।

६. ग्रामदान प्राप्त करना और उसके बाद ही ग्रामसभाओं का गठन करना और भूमिहीनों के लिए प्राप्त भूमि का वितरण करके भूमिवानों और भूमिहीनों के बीच पारस्परिक प्रेम और विश्वास का वातावरण पैदा करना।

तमिलनाडु सर्वोदय मण्डल ने १२ जनवरी '६९ की अपनी बैठक में उपरोक्त सभी कार्यक्रमों को तत्काल लागू करने और तंजौर जिले में शान्ति-आन्दोलन को सबल बनाने के लिए १ लाख का कोष एकत्र करने का निर्णय किया है। —एस० हरिहरन्

स्वास्थ्योपयोगी प्राकृतिक चिकित्सा की पुस्तकें

		लेखक	मूल्य
कुदरती उपचार		महात्मा गांधी	०-८०
आरोग्य की कुंजी		,, ,,	०-४४
रामनाम		,, ,,	०-५०
स्वस्थ रहना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है	द्वितीय संस्करण	धर्मचन्द सरावगी	२-००
सरल योगासन	,, ,,	,, ,,	२-५०
यह कलकत्ता है	,, ,,	,, ,,	२-००
तन्दुरुस्त रहने के उपाय	प्रथम संस्करण	,, ,,	२-२५
स्वस्थ रहना सीखें	,, ,,	,, ,,	२-००
घरेलू प्राकृतिक चिकित्सा	,, ,,	,, ,,	०-७५
पचास साल बाद	,, ,,	,, ,,	२-००
उपवास से जीवन-रक्षा		अनुवादक ,, ,,	३-००
रोग से रोग-निवारण		स्वामी शिवानन्द	२०-००
How to live 365 day a year		John	22-05
Every body guide to Nature cure		Benjamin	24-30
Fasting can save your life		Shelton	7-00
उपवास		शरण प्रसाद	१-२५
प्राकृतिक चिकित्सा-विधि		,, ,,	२-५०
पाचनतंत्र के रोगों की चिकित्सा		,, ,,	२-००
आहार और पोषण		झवेरभाई पटेल	१-५०
वनौषधि-शतक		रामनाथ वैद्य	२-५०

इन पुस्तकों के अतिरिक्त देशी-विदेशी लेखकों की भी अनेक पुस्तकें उपलब्ध हैं।

विशेष जानकारी के लिए सूचीपत्र मँगाइए।

एकमे, ८।१, एसप्लानेड ईस्ट, कलकत्ता—१

आन्दोलन के समाचार

पश्चिमनिमाड़ जिलादान-समारोह

महीनों के कठिन परिश्रम और उससे भी कठिन तप तथा जप के बाद सर्वोदय-पक्ष की समाप्ति से पहले पश्चिमनिमाड़ के जिलादान का संकल्प पूरा हुआ और गत १३ फरवरी, '६९ की शाम को खरगोन में जिलादान का समर्पण-समारोह असम की सुप्रसिद्ध लोक-सेविका कुमारी श्री अमलप्रभाबहन दास की अध्यक्षता में सानन्द सम्पन्न हुआ। जिले की आठों तहसीलों और सोलहों विकास-खण्डों के दानपत्र उस-उस क्षेत्र के प्रतिनिधियों ने अध्यक्षाजी को समर्पित किये। समर्पण विधि के बाद सबने मिलकर जिले में ग्राम-स्वराज्य की स्थापना के सामूहिक संकल्प को दोहराया।

सामूहिक संकल्प के बाद सुश्री निर्मला-बहन देशपाण्डे ने खरगोन जिले और खरगोन नगर के नागरिकों को जिलादान की उज्ज्वल सिद्धि पर अपनी आन्तरिक बधाई दी और राष्ट्रव्यापी अहिंसक क्रांति के सन्दर्भ में जिलादान तथा प्रदेशदान के ऐतिहासिक महत्त्व की चर्चा करते हुए इसे लोक-जागरण का एक सशक्त साधन निरूपित किया। उन्होंने कहा कि गाँवों में ग्राम-स्वराज्य की स्थापना से राष्ट्र की सुरक्षा के साथ ही लोकतंत्र की अपनी मूल शक्ति का विकास हो सकेगा और जब गाँव-गाँव की जनता अपने विकास की योजना स्वयं बनायेगी, तो आज की योजना के क्रम और उसके स्वरूप में भी क्रान्तिकारी परिवर्तन हो सकेगा। इस अवसर पर सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री मनमोहन चौधरी ने भी जिलादान का स्वागत करते हुए आज के राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ में उसके विशिष्ट महत्त्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। अध्यक्षा कुमारी श्री अमलप्रभाबहन दास ने जिलादान के लिए जिले की जनता का अभिनन्दन किया और जिले में ग्राम-स्वराज्य की स्थापना के लिए अपनी मंगल कामना प्रकट की।

मध्यप्रदेश सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष श्री वि० स० खोड़े ने जिलादान-सम्बन्धी जानकारी देते हुए बताया कि जिले के कुल २,०९२ गाँवों में से ३९२ गाँव गैर-आबाद और १,७०० गाँव आबाद हैं। इनमें से १,४८१ गाँवों ने ग्रामदान के घोषणापत्रों पर अपने हस्ताक्षर देकर ग्रामदान के विचार और कार्यक्रम को अपनी स्वीकृति दी है। इस तरह जिले के कुल ८७ प्रतिशत गाँव ग्रामदान में सम्मिलित हुए हैं। जिला गांधी-शताब्दी-समिति के संयोजक और पश्चिमनिमाड़ के जिलाध्यक्ष श्री केवलकृष्ण सेठी ने आरम्भ में बाहर से आये अतिथियों, प्रतिनिधियों और नागरिकों का स्वागत किया। समर्पण समारोह का सारा आयोजन जिला शताब्दी-समिति के तत्त्वावधान में हुआ। (सप्रेस)

मतदाता-शिक्षण अभियान

कानपुर। कानपुर के सभी उम्मीदवारों से एक सातसूत्री संक्षिप्त आचार-संहिता पर हस्ताक्षर कराने का प्रयास हुआ। १३ प्रत्याशियों ने हस्ताक्षर किये। ८ जनवरी को जिला परिषद हाल में एक सभा की गयी, जिसमें प्रमुख नागरिकों के अलावा ३ प्रत्याशियों ने भी अपने विचार व्यक्त किये। हमारे सुझाव पर कई क्षेत्रों के नागरिकों ने संयुक्त चुनाव-सभाओं का आयोजन किया। लोक-शिक्षण के लिए ८ हजार पत्रक छपवाकर बाँटे गये। गांधी शताब्दी-फोल्डर तथा पोस्टर का अच्छा उपयोग हुआ।

—विनय अवस्थी

बैतूल जिले में ५७ गाँव ग्रामदान

इन्दौर, १७ फरवरी। प्राप्त जानकारी के अनुसार ३० जनवरी से १२ फरवरी (गांधी-बलिदान दिवस से श्राद्ध-दिवस) तक मनाये जानेवाले सर्वोदय-पखवाड़े के अन्तर्गत बैतूल जिले के शाहपुर गाँव में दो दिन का शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर में २५० नागरिकों ने भाग लिया। तत्पश्चात शाहपुर विकास-खण्ड में ग्राम-स्वराज्य अभियान चलाया गया। अभियान में सर्वोदय-केन्द्र, करजगाँव क्षेत्र के अध्यापक, पटवारी, ग्रामसेवक तथा गांधी-निधि के तीन कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। परिणामस्वरूप ५७ गाँव ग्रामदान घोषित हुए। ८० रुपये का सर्वोदय-साहित्य बिका तथा "शताब्दी-सन्देश" पत्रिका के चार वार्षिक ग्राहक बनाये गये।

तीन तहसीलोंवाले बैतूल जिले में कुल १,२५० गाँव हैं, जिनमें से अब तक ७१ ग्रामदान हो चुके हैं। (सप्रेस)

सरगुजा जिले में उदयपुर प्रखण्डदान

अम्बिकापुर, १७ फरवरी। जिला-ग्रामदान-अभियान के अन्तर्गत सरगुजा जिले का उदयपुर प्रखण्ड ग्रामदान के अन्तर्गत आ गया है। पूरे प्रखण्ड में ९२ गाँव हैं, जिनमें से ८१ गाँव ग्रामदानी घोषित हुए। जिले में अबतक पाँच प्रखण्डदान घोषित हुए।

चांदा जिले में गढचिरोली प्रखण्डदान

महाराष्ट्र के चांदा जिले के गढचिरोली प्रखण्ड में गत १ फरवरी से पदयात्रा चल रही है। नाग-विदर्भ चरखा-संघ और ग्रामदान के कार्यकर्ताओं के संयुक्त प्रयास के फलस्वरूप गढ़चिरोली का प्रखण्डदान हुआ है। इस प्रखण्ड में कुल ९८ गाँव हैं, जिनमें से ८६ गाँव प्रखण्डदान में शामिल हुए। चांदा जिले में इसके पहले सिरोंचा का प्रखण्डदान हुआ था। यह अब दूसरा प्रखण्डदान हुआ है।

विभिन्न स्थानों में सर्वोदय-पक्ष

भीलवाड़ा (डाक से)। गांधी-श्राद्ध-दिवस के अवसर पर यहाँ से कोई २५ मील दूर त्रिवेणी-संगम पर आयोजित गांधी-मेले में प्रमुख सर्वोदय-नेता श्री सिद्धराज ढड्ढा ने कहा कि समाज-जीवन में सेवा और सहयोग के मूल्यों के विपरीत प्रतिस्पर्द्धा का वातावरण ही वर्तमान समस्याओं का कारण है। आपने कहा कि ग्रामदान-आन्दोलन से समाज-जीवन में प्रेम और सहयोग भावना का विकास सम्भव है। आपने ग्रामस्वराज्य को गांधीजी की कल्पना की नवसमाज-रचना का प्रतीक बताया।

सेवा संघ, बीगोद यहाँ प्रतिवर्ष १२ फरवरी को गांधी मेले का आयोजन करता है।

गत १२ फरवरी को खादी-ग्रामोद्योग कमीशन, श्रीनगर के तत्त्वावधान में सर्वोदय-दिवस के उपलक्ष में 'सूतांजलि' का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में श्रीगांधी आश्रम, श्री कस्तूरबा सेवा मंदिर, कश्मीर दस्तकार अंजुमन और जम्मू-कश्मीर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। इसके अतिरिक्त श्रीनगर के प्रमुख आमंत्रित नागरिक भी उपस्थित थे। कश्मीर के खादी-कमीशन के राज्य-कार्यालय के अन्तर्गत जितने केन्द्र हैं, उनमें ३० जनवरी से १२ फरवरी तक प्रतिदिन आध घंटा में गीता-पाठ, कुरान-शरीफ के मंत्रों का पाठ, भजन एवं सामूहिक कताई की गयी। आखिरी दिन १२ फरवरी को स्थानीय सभी रचनात्मक खादी-संस्थाओं को निमंत्रित कर सूतांजलि का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का महत्त्व सबको समझाने के लिए सर्व सेवा संघ द्वारा प्रसारित "सूतांजलि" नामक एक फोल्डर की नकलें आमंत्रितों को दी गयीं।

गांधी-जन्म शताब्दी के उपलक्ष में ३० जनवरी से १२ फरवरी तक बिहारीगंज "रामबाग", सहरसा में लोकसेवक श्री सोमनाथ साह के संयोजकत्व में सन्त-सम्मेलन, छात्र-सम्मेलन, महिला-सम्मेलन, शिक्षा और शिक्षक-सम्मेलन आदि रचनात्मक कार्यों का आयोजन किया गया। लगातार चौदह दिनों तक सामूहिक प्रार्थना, सामूहिक सफाई और गांधी-विचारों का अध्ययन-अध्यापन चलता रहा।

१२ फरवरी को नागरिकों की ओर से बाल-सहभोज हुआ। रात्रि में "गांधी का चरखा ही एकमात्र सहारा है" नामक नाटक का अभिनय स्थानीय बच्चों द्वारा किया गया। इस मेले में गांधी-साहित्य, बैज और 'गांधी-चित्रावली' काफी मात्रा में बेची गयी। स्थानीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों द्वारा धुनाई से लेकर बुनाई तक की क्रियाओं का प्रदर्शन किया गया, जिसमें एक थान खादी का कपड़ा बुना गया।

श्री प्रभाकरजी का अनशन समाप्त

श्री प्रभाकरजी ने गत १ फरवरी से अनशन शुरू किया था। अब आन्ध्र में शान्ति का प्रयास किया जाने लगा है तथा वातावरण में शान्ति है, अतः ११ फरवरी '६९ की रात को प्रभाकरजी ने अपना अनशन समाप्त किया।

प्रसन्नता की बात है कि आन्ध्र प्रदेश के सभी देश-हितैषियों का ध्यान अब इस ओर गया है। राज्य में शान्ति की स्थापना का प्रयत्न होने लगा है। आन्ध्र के सर्वोदयी नेता व कार्यकर्ताओं के एक दल का भी संगठन हो गया है, जिसमें डा० वेंपटि सूर्यनारायण, कोदाटि नारायण राव तथा उम्मेत्तल केशव राव जैसे सर्वोदयी नेता व कार्यकर्ता हैं। इस दल ने अपना कार्य शुरू कर दिया है।

कर्नाटक में महिला-लोकयात्रा

मैसूर राज्य सर्वोदय मण्डल और अन्य रचनात्मक संस्थाओं के तत्त्वावधान में २२ फरवरी, ६९ कस्तूरबा पुण्यतिथि से एक महिला-लोकयात्रा टोली निकली है। फिलहाल एक वर्ष के लिए मैसूर राज्य में संकल्पित इस लोकयात्रा का नेतृत्व गांधीजी की अंग्रेज शिष्या मिस हेलीमन (सुश्री सरलादेवी) कर रही हैं। सुश्री सरलादेवी ने देश के आजादी-आन्दोलन में उल्लेखनीय योगदान दिया है। भारत की आजादी के पश्चात वे उत्तराखण्ड में रचनात्मक कामों में लगी रहीं। टोली में पंजाब की कु० तारा और कर्नाटक की कु० लक्ष्मी भी शामिल हैं।

लोकयात्रा का उद्देश्य वर्तमान परिस्थिति के संदर्भ में स्त्री-जागरण एवं उनमें नवशक्ति का संचार करना है। यह स्मरणीय है कि विनोबाजी की प्रेरणा से ऐसी एक लोकयात्रा १२ वर्ष तक भारत-भ्रमण का निश्चय कर अक्तूबर, '६७ में इन्दौर से प्रारम्भ हुई थी। यह लोकयात्रा टोली आजकल हरियाणा राज्य में घूम रही है। (सप्रेस)

दिल्ली में ८-९ मार्च को शराबबन्दी हेतु राष्ट्रीय सम्मेलन

सम्पूर्ण देश में शराबबन्दी लागू करने के उद्देश्य से ८ व ९ मार्च को एक राष्ट्रीय सम्मेलन नयी दिल्ली में करने का निश्चय किया गया है।

कलकत्ता में साहित्य-प्रचार

कलकत्ता शहर में वयोवृद्ध श्री दातारामजी मक्कड़ कई वर्षों से लगनपूर्वक सर्वोदय-साहित्य का प्रचार कर रहे हैं। सन् १९६७ की दीपावली से १९६८ की दीपावली तक के वर्ष में आपने लगभग दस हजार रु० की साहित्य-बिक्री की, पत्रिकाओं के १८३ ग्राहक बनाये और ५९६ रु० की पत्रिकाएँ भी बेचीं।

दिल्ली में राष्ट्रीय एकता-सम्मेलन

श्री शंकरराव देव की अध्यक्षता और श्री जयप्रकाश नारायण की उपस्थिति में दिल्ली में २१ से २३ फरवरी, '६९ तक राष्ट्रीय एकता-सम्मेलन हुआ। उक्त सम्मेलन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, भारतीय जनसंघ, प्रजा-सोशलिस्ट पार्टी, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी, कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) और भारतीय रिपब्लिकन पार्टी तथा सार्वजनिक क्षेत्र के ७० से अधिक प्रतिनिधि शरीक हुए। विभिन्न प्रकार के मतों की अभिव्यक्ति के बावजूद एकता-सम्मेलन मे हुई चर्चाओं द्वारा सम्बन्धित कई मुद्दों पर बहुत हद तक सर्वानुमोदित राय बन सकी।

श्री धीरेन्द्र भाई के कार्यक्रम में परिवर्तन

८ मार्च तक	: आरा
१० मार्च से १३ मार्च तक	: मधुबनी
१५ मार्च, १६ मार्च	: हाजीपुर
१८ मार्च से २८ मार्च तक	: आगरा
२९ मार्च, ३० मार्च	: ललितपुर
१ अप्रैल से ६ अप्रैल तक	: टीकमगढ़
१० अप्रैल से २ मई तक	: मधुबनी

वार्षिक शुल्क : १० रु०; विदेश में २० रु०; या २५ शिलिंग या ३ डालर। एक प्रति : २० पैसे।
श्रीकृष्णदत्त भट्ट द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं इण्डियन प्रेस (प्रा०) लि० वाराणसी में मुद्रित।